28 सूरए अल क़सस

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 1

आयत का अनुवाद:
"ता सीन मीम (1) (ऐ रसूल) ये वाज़ेए व रौशन किताब की आयतें हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत इस बात का दावा करती है कि यह किताब स्पष्ट और रोशन आयतों से युक्त है।**
- **हेतु (Reason): इस आयत का दावा है कि यह किताब स्पष्ट है, लेकिन बिना किसी प्रमाण के इसे सार्वभौमिक रूप से स्पष्ट और रोशन मानना उचित नहीं है। यह केवल एक अधूरी और अनिश्चित दावे की तरह प्रस्तुत होती है, जो तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, किसी भी दावे को प्रमाण (प्रमाण) द्वारा सत्यापित किया जाना चाहिए। लेकिन यहां "वाज़ेए और रोशन" होने का दावा बिना किसी वैज्ञानिक या दार्शनिक प्रमाण के किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में स्पष्टता का दावा तर्कसंगत प्रमाण से रहित है, और इसका व्याख्यान सही प्रमाण के अभाव में अस्पष्ट होता है।**

आयत 2

आयत का अनुवाद:
"(जिसमें) हम तुम्हारे सामने मूसा और फ़िरऔन का वाक़िया ईमानदार लोगों के नफ़े के वास्ते ठीक ठीक बयान करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में मूसा और फिरऔन के वाकिये का बयान किया गया है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत बयान करती है कि मूसा और फिरऔन का वाक़िया ईमानदार लोगों के नफ़े के लिए है, लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से यह घटना और इसकी वज़ह पूरी तरह से प्रमाणित और साक्ष्य से स्पष्ट नहीं है।**
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दार्शनिक ग्रंथों जैसे वेद और भगवद गीता में सत्य और वास्तविकता का प्रमाण अनुभव और तर्क से मिलता है, जबकि इस आयत में ऐतिहासिक तथ्यों का कोई प्रमाण नहीं है।
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में बयान किए गए घटनाक्रम का कोई प्रमाणिक आधार नहीं है और यह इतिहास से अधिक विश्वास या विश्वास पर आधारित है।**

आयत 3

आयत का अनुवाद:
"बेशक फिरऔन ने (मिस्र की) सरज़मीन में बहुत सर उठाया था और उसने वहाँ के रहने वालों को कई गिरोह कर दिया था उनमें से एक गिरोह (बनी इसराइल) को आजिज़ कर रखा था कि उनके बेटों को ज़बाह करवा देता था और उनकी औरतों (बेटियों) को ज़िंदा छोड़ देता था बेशक वह भी मुफ़सिदों में था।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** फिरऔन द्वारा बनी इसराइल पर अत्याचार का विवरण।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में अत्याचार का वर्णन किया गया है, लेकिन इसे एकतरफा दृष्टिकोण से पेश किया गया है। फिरऔन की कार्रवाइयों का विवरण जो केवल एक ऐतिहासिक दृष्टि से दिया गया है, इस पर न्याय दर्शन के सिद्धांतों के तहत तर्क से ज्यादा साक्ष्य का अभाव है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में भी शोषण और अत्याचार के खिलाफ तर्क और न्याय के सिद्धांत मिलते हैं, जैसे भगवद गीता में कृष्ण ने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष का निर्देश दिया।
- **निगमन (Conclusion):** इस आयत में अत्याचार का विवरण देने के बजाय, यह किसी एक ऐतिहासिक घटना को प्रमाणित करने की बजाय एक विश्वास आधारित परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

आयत 4

आयत का अनुवाद:

"और हम तो ये चाहते हैं कि जो लोग रुए ज़मीन में कमज़ोर कर दिए गए हैं उनपर एहसान करे और उन्हीं को (लोगों का) पेशवा बनाएँ और उन्हीं को इस (सरज़मीन) का मालिक बनाएँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि ईश्वर कमजोर लोगों पर एहसान करेगा और उन्हें शक्तिशाली बनाएगा।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में यह दावा किया गया है कि यह ईश्वर की इच्छा है कि कमजोर लोग शक्तिशाली बनें, लेकिन इसके लिए कोई स्पष्ट प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है। यह दावा न केवल आध्यात्मिक रूप से बल्कि भौतिक दृष्टि से भी अप्रमाणित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कर्म के सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर अपने फल प्राप्त करता है, न कि केवल ईश्वर की इच्छा से।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना कमजोरों को शक्तिशाली बनाने की अवधारणा को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
1	**प्रमाण**	**आयत में स्पष्टता का दावा बिना प्रमाण के किया गया है।**
2	**प्रमाण**	**ऐतिहासिक तथ्यों का अभाव और केवल विश्वास पर आधारित।**
3	**हेतु**	**अत्याचार का विवरण तर्क और साक्ष्य के बिना प्रस्तुत किया गया है।**
4	**प्रमाण**	**ईश्वर द्वारा कमजोरों को शक्तिशाली बनाने का दावा प्रमाण और तर्क के बिना।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क, प्रमाण और वास्तविक साक्ष्य का अभाव है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के तहत, किसी भी दावे को प्रमाण और तर्क के आधार पर सत्यापित किया जाना चाहिए, लेकिन इन आयतों में इसका पालन नहीं किया गया है। ये विचार अप्रमाणित और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 6

आयत का अनुवाद:
"और उन्हीं को रुए ज़मीन पर पूरी कुदरत अता करे और फिरऔन और हामान और उन दोनों के लश्करों को उन्हीं कमज़ोरों के हाथ से वह चीज़ें दिखायें जिससे ये लोग डरते थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि कमजोरों को पूरी कुदरत दी जाएगी और वे ताकतवर शासकों से डराने वाली चीज़ें दिखाएंगे।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना किसी ठोस प्रमाण या तर्क के किया गया है। कमजोरों को ताकतवर बनाने की अवधारणा वास्तविकता से मेल नहीं खाती, और इससे कोई तर्कसंगत समर्थन नहीं मिलता।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार किसी घटना का प्रमाणित होना आवश्यक है, और यहां केवल विश्वास पर आधारित दावा किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना किसी प्रमाण और तर्क के एक सशक्त, यथार्थ से परे कथन प्रस्तुत करती है।**

आयत 7

आयत का अनुवाद:
"और हमने मूसा की माँ के पास ये wahi भेजी कि तुम उसको दूध पिला लो फिर जब उसकी निस्बत तुमको कोई ख़ौफ हो तो इसको (एक सन्दूक़ में रखकर) दरिया में डाल दो और (उस पर) तुम कुछ न डरना और न कुढ़ना (तुम इतमेनान रखो) हम उसको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देगें और उसको (अपना) रसूल बनाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत मूसा की माँ को आदेश देती है कि वह मूसा को सन्दूक़ में डालकर दरिया में बहा दे, और ईश्वर वचन का पालन करेगा।**
- **हेतु (Reason): यह कथन विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसके कोई ठोस ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं। किसी भी ऐतिहासिक घटना को केवल विश्वास के आधार पर स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में घटनाओं का विश्लेषण तर्क, अनुभव, और प्रमाण से किया जाता है, न कि केवल विश्वास के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में बताई गई घटना विश्वास और आस्था पर आधारित है, जबकि न्याय दर्शन के सिद्धांतों में अनुभव और प्रमाण महत्वपूर्ण होते हैं।**

आयत 8

आयत का अनुवाद:
"(ग़रज़ मूसा की माँ ने दरिया में डाल दिया) वह सन्दूक़ बहते बहते फिरऔन के महल के पास आ लगा तो फिरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया ताकि (एक दिन यही) उनका दुशमन और उनके राज़ का बायस बने इसमें शक नहीं कि फिरऔन और हामान उन दोनों के लश्कर ग़लती पर थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि मूसा का सन्दूक़ फिरऔन के महल के पास पहुंचा और फिरऔन के लोग उसे उठा ले गए।**
- **हेतु (Reason): यह कथन बिना तर्क के प्रस्तुत किया गया है। सन्दूक़ का बहना और फिरऔन के महल तक पहुंचना एक अत्यंत असामान्य और अद्भुत घटना है, जो तर्क और प्रमाण से समर्थित नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन के अनुसार, किसी घटना का अनुमान और प्रमाण आवश्यक है, और इस आयत में घटना का कोई स्थायी या सत्यापित प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया गया है।**

- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना तर्क और प्रमाण के एक असामान्य घटना प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 9

आयत का अनुवाद:
"और (जब मूसा महल में लाए गए तो) फिरऔन की बीबी (आसिया अपने शौहर से) बोली कि ये मेरी और तुम्हारी (दोनों की) आँखों की ठन्डक है तो तुम लोग इसको क़त्ल न करो क्या अजब है कि ये हमको नफ़ा पहुँचाए या हम उसे ले पालक ही बना लें और उन्हें (उसी के हाथ से बर्बाद होने की) ख़बर न थी।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फिरऔन की बीवी आसिया मूसा को पालक के रूप में रखने का सुझाव देती है।**
- **हेतु (Reason): यह आयत यह दर्शाती है कि फिरऔन की पत्नी ने मूसा को पालक के रूप में रखने का प्रस्ताव दिया, लेकिन यह विचार बिना किसी तर्क या प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है। यह केवल एक कथन है, जिसमें कोई भौतिक या दार्शनिक प्रमाण नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी फैसले या विचार का पालन तर्क और प्रमाण से किया जाता है। यह आयत बिना तर्क के एक एकतरफा विचार प्रस्तुत करती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना एक विचार प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 10

आयत का अनुवाद:
"इधर तो ये हो रहा था और (उधर) मूसा की माँ का दिल ऐसा बेचैन हो गया कि अगर हम उसके दिल को मज़बूत कर देते तो क़रीब था कि मूसा का हाल ज़ाहिर कर देती और हमने इसीलिए ढारस दी ताकि वह (हमारे वायदे का) यक़ीन रखे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत दावा करती है कि मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया था, लेकिन ईश्वर ने उसे ढारस दिया ताकि वह विश्वास रखे।
- **हेतु (Reason):** इस आयत में ईश्वर द्वारा मूसा की माँ को ढारस देने की बात की गई है, लेकिन यह दावा केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, किसी भी मानसिक स्थिति या अनुभव का विश्लेषण तर्क और प्रमाण से किया जाता है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना विश्वास और आस्था पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
6	प्रमाण	विश्वास के आधार पर कमजोरों को ताकतवर बनाने का दावा, बिना प्रमाण के।
7	प्रमाण	विश्वास पर आधारित घटना, कोई ऐतिहासिक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं।
8	अनुमान	असामान्य घटना, कोई ठोस प्रमाण नहीं।
9	हेतु	तर्क और प्रमाण के बिना एक विचार प्रस्तुत किया गया।
10	प्रमाण	विश्वास पर आधारित ढारस देने का दावा, कोई प्रमाण नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क, प्रमाण और वास्तविक साक्ष्य का अभाव है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के तहत, किसी भी दावे को प्रमाण और तर्क के आधार पर सत्यापित किया जाना चाहिए, लेकिन इन आयतों में इसका पालन नहीं किया गया है। ये विचार अप्रमाणित और तर्कसंगत दृष्टिकोण से कमजोर प्रतीत होते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 11

आयत का अनुवाद:
"और मूसा की माँ ने (दरिया में डालते वक़्त) उनकी बहन (कुलसूम) से कहा कि तुम इसके पीछे पीछे (अलग) चली जाओ तो वह मूसा को दूर से देखती रही और उन लोगों को उसकी ख़बर भी न हुई।"

चुना गया न्याय तत्व:
अनुमान (Anumana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दर्शाती है कि मूसा की बहन ने अपने भाई की देखरेख की और वह दूर से उसकी स्थिति देख रही थी, जबकि किसी को इसकी खबर नहीं हुई।**
- **हेतु (Reason): यह घटना अत्यधिक असामान्य और दुरूह लगती है। इतनी बड़ी घटना, जिसमें मूसा का सन्दूक़ दूर से देखा जा रहा है, को केवल अनुमान पर आधारित किया गया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना का प्रमाणित होना आवश्यक होता है। यह घटना केवल विश्वास और कल्पना पर आधारित प्रतीत होती है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में कही गई बातों का कोई ठोस प्रमाण नहीं है और यह तर्कसंगत रूप से सिद्ध नहीं हो पाती। यह घटना अनुमान और विश्वास पर आधारित है।**

आयत 12

आयत का अनुवाद:
"और हमने मूसा पर पहले ही से और दाईयों (के दूध) को हराम कर दिया था (कि किसी की छाती से मुँह न लगाया) तब मूसा की बहन बोली भला मैं तुम्हें एक घराने का पता बताऊ कि वह तुम्हारी ख़ातिर इस बच्चे की परवरिश कर देंगे और वह यक़ीनन इसके खैरख़्वाह होगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि मूसा को दाईयों के दूध से हराम कर दिया गया था और फिर उसकी बहन ने एक घराने का प्रस्ताव रखा जो मूसा की परवरिश करेगा।**
- **हेतु (Reason): यह दावा बिना किसी ठोस तर्क या प्रमाण के किया गया है। दाईयों से दूध हराम कर देना और उसके बाद एक प्रस्तावित घराने के पास भेजने की कहानी केवल विश्वास पर आधारित है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, किसी भी घटना का विश्लेषण तर्क और प्रमाण से किया जाना चाहिए, लेकिन इस आयत में यह अनुपस्थित है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का कथन बिना किसी प्रमाण के है और विश्वास पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 13

आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ (इस तरकीब से) हमने मूसा को उसकी माँ तक फिर पहुँचा दिया ताकि उसकी आँख ठन्डी हो जाए और रंज न करे और ताकि समझ ले ख़ुदा का वायदा बिल्कुल ठीक है मगर उनमें के अक्सर नहीं जानते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत दावा करती है कि मूसा को उसकी माँ के पास वापस भेज दिया गया ताकि वह मानसिक शांति और विश्वास प्राप्त करे।**
- **हेतु (Reason): यह कथन विश्वास पर आधारित है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं है। यदि मूसा को सच में उसकी माँ से मिलवाया गया था, तो इसका कोई ठोस ऐतिहासिक या भौतिक प्रमाण होना चाहिए था, जो कि यहाँ नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, किसी भी घटना का प्रमाण और तर्क आवश्यक है। इस आयत में इसका अभाव है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत विश्वास पर आधारित है, जो तर्क और प्रमाण के बिना कही गई है, और न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 14

आयत का अनुवाद:
"और जब मूसा अपनी जवानी को पहुँचे और (हाथ पाँव निकाल के) दुरुस्त हो गए तो हमने उनको हिकमत और इल्म अता किया और नेकी करने वालों को हम यूँ जज़ाए ख़ैर देते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: यह आयत दावा करती है कि मूसा को जवानी में हिकमत और इल्म दिया गया।
- **हेतु (Reason)**: यह घटना केवल विश्वास पर आधारित है और इसका कोई ठोस प्रमाण या तर्क नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन के अनुसार, किसी भी ज्ञान या शिक्षा का प्रमाण आवश्यक है, और इस आयत में इसका अभाव है।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत तर्क और प्रमाण के बिना एक धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।

आयत 15

आयत का अनुवाद:
"और एक दिन इत्तिफाक़न मूसा शहर में ऐसे वक़्त आए कि वहाँ के लोग (नींद की) ग़फलत में पड़े हुए थे तो देखा कि वहाँ दो आदमी आपस में लड़े मरते हैं ये (एक) तो उनकी क़ौम (बनी इसराइल) में का है और वह (दूसरा) उनके दुशमन की क़ौम (क़िब्ती) का है तो जो शख़्स उनकी क़ौम का था उसने उस शख़्स से जो उनके दुशमनों में था (ग़लबा हासिल करने के लिए) मूसा से मदद माँगी ये सुनते ही मूसा ने उसे एक घूसा मारा था कि उसका काम तमाम हो गया फिर (ख़्याल करके) कहने लगे ये शैतान का काम था इसमें शक नहीं कि वह दुशमन और खुल्लम खुल्ला गुमराह करने वाला है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: यह आयत दावा करती है कि मूसा ने एक आदमी को मारा और बाद में उसे शैतान का काम माना।
- **हेतु (Reason)**: यह कथन बिना किसी ठोस तर्क या प्रमाण के किया गया है। मूसा का यह कार्य केवल विश्वास और आस्था पर आधारित था, और इसका कोई तार्किक आधार नहीं था।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, किसी भी निर्णय का प्रमाण और तर्क होना चाहिए, और इस आयत में यह अनुपस्थित है।
- **निगमन (Conclusion)**: इस आयत में मूसा के निर्णय के पीछे कोई ठोस तर्क या प्रमाण नहीं दिया गया है, और यह केवल धार्मिक विश्वास पर आधारित है।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
11	अनुमान	विश्वास पर आधारित घटना, कोई प्रमाण नहीं।
12	हेतु	बिना प्रमाण के घटना प्रस्तुत की गई।
13	प्रमाण	विश्वास पर आधारित कथन, कोई प्रमाण नहीं।
14	प्रमाण	बिना प्रमाण के हिकमत और इल्म देने का दावा।
15	हेतु	मूसा के निर्णय का कोई तर्क या प्रमाण नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में भी तर्क, प्रमाण और वास्तविक साक्ष्य का अभाव है। न्याय दर्शन के सिद्धांतों के तहत, किसी भी दावे या घटना का समर्थन प्रमाण और तर्क के माध्यम से किया जाना चाहिए, लेकिन इन आयतों में यह अनुपस्थित है। इन आयतों के आधार पर कोई तार्किक या दार्शनिक मूल्यांकन नहीं किया जा सकता है, और ये कथन केवल विश्वास और आस्था पर निर्भर करते हैं।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 16

आयत का अनुवाद:
"(फिर बारगाहे ख़ुदा में) अर्ज़ की परवरदिगार बेशक मैने अपने ऊपर आप ज़ुल्म किया (कि इस शहर में आया) तो तू मुझे (दुशमनो से) पोशीदा रख-ग़रज़ ख़ुदा ने उन्हें पोशीदा रखा (इसमें तो शक नहीं कि वह बड़ा पोशीदा रखने वाला मेहरबान है)"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने ख़ुदा से मदद मांगी कि वह उन्हें शत्रुओं से छुपा ले।**
- **हेतु (Reason): यहाँ यह दावा किया गया है कि ख़ुदा ने मूसा को बचाया, लेकिन इसके कोई ठोस प्रमाण या ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं हैं। यह घटना एक विश्वास और धार्मिक आस्था पर आधारित है।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी घटना का प्रमाणित होना आवश्यक होता है। इस आयत में यह प्रमाणित नहीं किया गया कि मूसा को सचमुच बचाया गया।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत बिना प्रमाण के एक धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 17

आयत का अनुवाद:
"मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार चूँकि तूने मुझ पर एहसान किया है मै भी आइन्दा गुनाहगारों का हरगिज़ मदद गार न बनूगाँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने यह वचन लिया कि वह भविष्य में गुनाहगारों की मदद नहीं करेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह वचन बिना किसी तार्किक कारण या व्याख्या के दिया गया है। यह केवल धार्मिक कर्तव्य और व्यक्तिगत आस्था का प्रतीक है, लेकिन इसका कोई ठोस तार्किक आधार नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी निर्णय को तर्क और प्रमाण से समर्थित किया जाता है, लेकिन इस आयत में ऐसा कुछ नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत विश्वास और धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 18

आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ (रात तो जो त्यों गुज़री) सुबह को उम्मीदो बीम की हालत में मूसा शहर में गए तो क्या देखते हैं कि वही शख़्स जिसने कल उनसे मदद माँगी थी उनसे (फिर) फरियाद कर रहा है-मूसा ने उससे कहा बेशक तू यक़ीनी खुल्लम खुल्ला गुमराह है।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: मूसा को एक व्यक्ति फिर से मदद मांगता दिखता है, और मूसा उसे गुमराह मानते हैं।
- **हेतु (Reason)**: यहाँ मूसा की प्रतिक्रिया तत्काल और बिना किसी सोच विचार के है। यह तर्कसंगत नहीं है कि कोई व्यक्ति बार-बार मदद मांगे और फिर उसी व्यक्ति को गुमराह घोषित कर दिया जाए। यह निर्णय बहुत जल्दबाजी और बिना गहरी समझ के लिया गया।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना या निर्णय पर विचार करने के लिए गहरे विचार और तर्क का होना आवश्यक है, लेकिन इस आयत में यह अनुपस्थित है।
- **निगमन (Conclusion)**: मूसा का निर्णय अत्यधिक त्वरित और बिना आधार के है, और न्याय दर्शन के अनुसार यह उचित नहीं है।

आयत 19

आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ जब मूसा ने चाहा कि उस शख़्स पर जो दोनों का दुश्मन था (छुड़ाने के लिए) हाथ बढ़ाएँ तो क़िब्ती कहने लगा कि ऐ मूसा जिस तरह तुमने कल एक आदमी को मार डाला (उसी तरह) मुझे भी मार डालना चाहते हो तो तुम बस ये चाहते हो कि रुए ज़मीन में सरकश बन कर रहो और मसलह (क़ौम) बनकर रहना नहीं चाहते।"

चुना गया न्याय तत्व:
उदाहरण (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: मूसा द्वारा एक व्यक्ति को बचाने का प्रयास करने पर, क़िब्ती उनका विरोध करता है और उन्हें विरोधी तत्व के रूप में प्रस्तुत करता है।
- **हेतु (Reason)**: क़िब्ती का आरोप मूसा पर सही नहीं प्रतीत होता है। यह एक व्यक्ति के संघर्ष की स्थिति को निरंतर बढ़ाता है, जिससे मूसा को ग़लत और अधिक आलोचना का शिकार बनाया जाता है। यहाँ पर कोई संतुलित तर्क नहीं दिया गया है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, हर प्रकार की कार्रवाई का विवेचन और तुलना (Upamana) करने की आवश्यकता होती है, और इसे निष्पक्षता से प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ पर क़िब्ती का आरोप मूसा पर अनुचित और बिना विचार के लगता है।
- **निगमन (Conclusion)**: क़िब्ती का आरोप निराधार है और यह आरोप केवल भ्रामक विचारों पर आधारित है, जो न्याय दर्शन में स्वीकार्य नहीं हैं।

आयत 20

आयत का अनुवाद:
"और एक शख़्स शहर के उस किनारे से डराता हुआ आया और (मूसा से) कहने लगा मूसा (तुम ये यक़ीन जानो कि शहर के) बड़े बड़े आदमी तुम्हारे आदमी तुम्हारे बारे में मशवरा कर रहे हैं कि तुमको कत्ल कर डालें तो तुम (शहर से) निकल भागो।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापकता (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ यह दावा किया गया है कि शहर के बड़े लोग मूसा को मारने का विचार कर रहे हैं।**
- **हेतु (Reason): यह घटना एक पूर्वाग्रह और बिना तथ्यों के कथन के आधार पर रखी गई है। यदि सचमुच ऐसे विचार हो रहे थे, तो उनका प्रमाण देने की आवश्यकता थी। यह बिना साक्ष्य के आरोप है।**
- **उदाहरण (Example): न्याय दर्शन में, हर घटना या विचार का प्रमाण आवश्यक होता है। इस आयत में यह प्रमाणित नहीं किया गया है कि ऐसा सचमुच हुआ।**
- **निगमन (Conclusion): यह कथन बिना किसी प्रमाण के प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
16	प्रमाण	घटना का कोई ठोस प्रमाण नहीं, विश्वास पर आधारित।
17	हेतु	बिना कारण के वचन, तर्क का अभाव।
18	हेतु	बिना विवेक और तर्क के निर्णय, जल्दबाजी।
19	उदाहरण	क़िब्ती का आरोप बिना सोच विचार के और निराधार।
20	व्यापकता	बिना प्रमाण के आरोप, प्रमाण का अभाव।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में भी न्याय दर्शन के अनुसार तर्क, प्रमाण और साक्ष्य का अभाव है। सभी आयतें विश्वास और धार्मिक आस्था पर आधारित हैं, और न्याय दर्शन में किसी भी घटना या निर्णय को प्रमाण और तर्क के आधार पर स्वीकारा जाता है। यहाँ यह अनुपस्थित है, जिससे इन आयतों का तार्किक मूल्यांकन उचित नहीं होता।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 21

आयत का अनुवाद:
"मै तुमसे ख़ैरख़्वाहाना (भलाइ के लिए) कहता हूँ ग़रज़ मूसा वहाँ से उम्मीद व बीम की हालत में निकल खड़े हुए और (बारगाहे ख़ुदा में) अर्ज़ की परवरदिगार मुझे ज़ालिम लोगों (के हाथ) से नजात दे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने ख़ुदा से मदद मांगी और ज़ालिमों से बचने के लिए नजात की अरदास की।**
- **हेतु (Reason): यह आयत एक धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत करती है, जिसमें किसी दिव्य शक्ति से मदद की उम्मीद जताई गई है, लेकिन इसका कोई तर्क या प्रमाण नहीं है। न्याय दर्शन में किसी भी कथन का प्रमाण और साक्ष्य होना आवश्यक होता है, जो इस आयत में अनुपस्थित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी घटना को प्रमाणित किया जाता है और तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ, मूसा की मदद के लिए ख़ुदा से दुआ की गई है, लेकिन कोई स्पष्ट तर्क नहीं दिया गया।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में एक धार्मिक विश्वास को प्रस्तुत किया गया है, जिसका न्याय दर्शन में कोई ठोस प्रमाण नहीं है।**

आयत 22

आयत का अनुवाद:
"और जब मदियन की तरफ़ रुख़ किया (और रास्ता मालूम न था) तो आप ही आप बोले मुझे उम्मीद है कि मेरा परवरदिगार मुझे सीधे रास्ता दिखा दे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** मूसा ने ख़ुदा से रास्ता दिखाने की दुआ की, जब वह मदियन की तरफ़ जा रहे थे।
- **हेतु (Reason):** यह आयत भी विश्वास और आस्था पर आधारित है। यहाँ पर कोई व्यावहारिक या तर्कसंगत आधार नहीं है कि कैसे ख़ुदा रास्ता दिखाता है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में, किसी भी निर्णय को प्रमाण, तर्क और कारण से समर्थन मिलना चाहिए। यहाँ ऐसा कुछ भी नहीं है, केवल आस्था पर आधारित एक बयान है।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत भी एक आस्थावादी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तार्किक रूप से अनुपस्थित है।

आयत 23

आयत का अनुवाद:
"और (आठ दिन फाक़ा करते चले) जब शहर मदियन के कुओं पर (जो शहर के बाहर था) पहुँचें तो कुओं पर लोगों की भीड़ देखी कि वह (अपने जानवरों को) पानी पिला रहे हैं और उन सबके पीछे दो औरतो (हज़रत शुएब की बेटियाँ) को देखा कि वह (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी है मूसा ने पूछा कि तुम्हारा क्या मतलब है वह बोली जब तक सब चरवाहे (अपने जानवरों को) ख़ूब छक के पानी पिला कर फिर न जाएँ हम नहीं पिला सकते और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
उदाहरण (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** मूसा ने देखा कि दो औरतें पानी नहीं पिला पा रही थीं, क्योंकि अन्य लोग पहले पानी पिला रहे थे, और उन्होंने उनकी मदद की।

- **हेतु (Reason): यह स्थिति एक तुलना (उपमेय) के माध्यम से प्रस्तुत की गई है, जिसमें यह बताया गया है कि औरतों को मदद की आवश्यकता थी। हालांकि, यह भी आस्था पर आधारित है कि मूसा ने एक दयालु व्यक्ति के रूप में उनकी मदद की।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, यह घटना मानवता और सहयोग का एक उदाहरण हो सकती है, लेकिन यह तर्क के बिना सिर्फ एक नैतिक क़िस्से के रूप में प्रस्तुत किया गया है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक नैतिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, लेकिन यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तर्क और प्रमाण की कमी के कारण संदेहास्पद है।**

आयत 24

आयत का अनुवाद:
"तब मूसा ने उन की (बकरियों) के लिए (पानी खीच कर) पिला दिया फिर वहाँ से हट कर छांव में जा बैठे तो (चूँकि बहुत भूक थी) अर्ज़ की परवरदिगार (उस वक़्त) जो नेअमत तू मेरे पास भेज दे मै उसका सख़्त हाजत मन्द हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने भूख और थकावट के कारण ख़ुदा से मदद की दुआ की।**
- **हेतु (Reason): यहाँ मूसा की दुआ एक व्यक्तिगत और आस्थावादी कदम है, लेकिन यह बिना तर्क और प्रमाण के किया गया है। भारतीय दर्शन में कोई भी कार्य प्रमाण और कारण से होना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी प्रार्थना या दुआ को वैज्ञानिक और तर्कसंगत रूप से स्वीकार नहीं किया जाता, अगर उसके पीछे कोई वास्तविक आधार नहीं हो।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में भी एक आस्थावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 25

आयत का अनुवाद:
"इतने में उन्हीं दो में से एक औरत शर्मीली चाल से आयी (और मूसा से) कहने लगी-मेरे वालिद तुम को बुलाते हैं ताकि तुमने जो (हमारी बकरियों को) पानी पिला दिया है तुम्हें उसकी मज़दूरी दे ग़रज़ जब मूसा उनके पास आए और उनसे अपने किस्से बयान किए तो उन्होंने कहा अब कुछ अन्देशा न करो तुमने ज़ालिम लोगों के हाथ से नजात पायी।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापकता (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): एक औरत ने मूसा से कहा कि उनका वालिद उन्हें बुला रहे हैं ताकि उन्होंने बकरियों को पानी पिलाने का बदला दिया जा सके।**
- **हेतु (Reason): इस आयत में कोई तर्क या व्याख्या नहीं है कि कैसे यह घटना मूसा के लिए एक संकेत थी। यह केवल एक संयोग जैसा प्रतीत होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, कोई भी घटना या परिणाम व्याख्यात्मक और तर्कसंगत रूप से प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ ऐसा नहीं हुआ।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक संयोग पर आधारित है और बिना किसी प्रमाण के दी गई है, जिससे यह न्याय दर्शन के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
21	**प्रमाण**	**बिना प्रमाण के दुआ और विश्वास पर आधारित है।**
22	**हेतु**	**बिना तर्क के आस्था और विश्वास की दुआ।**
23	**उदाहरण**	**नैतिक दृष्टिकोण, लेकिन तर्क की कमी।**
24	**प्रमाण**	**आस्थावादी दृष्टिकोण, तर्क और प्रमाण की कमी।**
25	**व्यापकता**	**संयोग पर आधारित घटना, तर्क और प्रमाण का अभाव।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में अधिकांशतः विश्वास और आस्था पर आधारित घटनाओं का वर्णन है, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुसार तर्क और प्रमाण से समर्थित नहीं हैं। इन आयतों का तर्कपूर्ण और प्रमाणिक विश्लेषण किया जाना चाहिए, ताकि इन्हें न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप माना जा सके।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 26

आयत का अनुवाद:
"इसी असना में) उन दोनों में से एक लड़की ने कहा ऐ अब्बा इन को नौकर रख लीजिए क्योंकि आप जिसको भी नौकर रखें सब में बेहतर वह है जो मज़बूत और अमानतदार हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): लड़की ने यह सुझाव दिया कि मूसा को एक नौकर के रूप में चुनना चाहिए जो शारीरिक रूप से मजबूत और ईमानदार हो।**
- **हेतु (Reason): यह विचार एक सामान्य और तार्किक विचार है, जो भारतीय दर्शन में भी एक सामान्य तथ्य है। एक व्यक्ति को नौकरी देने के लिए उसकी क्षमता और ईमानदारी महत्वपूर्ण मापदंड होते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दार्शनिकता में कर्म (कार्य) का चयन उसकी योग्यता और विश्वास के आधार पर किया जाता है। इस आयत में भी यह तर्क है कि श्रेष्ठ कार्यकर्ता वह है जो ताकतवर और ईमानदार हो।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तार्किक रूप से सही और न्यायसंगत प्रतीत होती है, क्योंकि यह सटीक कार्य चयन और गुणसूत्रों पर आधारित है।**

आयत 27

आयत का अनुवाद:
"और इनमें दोनों बातें पायी जाती हैं तब) शुएब ने कहा मैं चाहता हूँ कि अपनी दोनों लड़कियों में से एक के साथ तुम्हारा इस (महर) पर निकाह कर दूँ कि तुम आठ बरस तक मेरी नौकरी करो और अगर तुम दस बरस पूरे कर दो तो तुम्हारा एहसान और मैं तुम पर मेहनत मशक्कत भी डालना नहीं चाहता और तुम मुझे इन्शा अल्लाह नेक आदमी पाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): शुएब ने मूसा से यह समझौता किया कि वह आठ या दस साल तक काम करेगा और इसके बदले उसकी बेटी से विवाह होगा।**

- **हेतु (Reason): यह व्यवहार एक प्रकार से पारंपरिक समझौते का उदाहरण है, जो भारतीय न्यायशास्त्र में भी प्रचलित है। लेकिन, यह समझौता शर्तों पर आधारित है, जो न्यायिक दृष्टिकोण से एक सम्यक तर्क नहीं हो सकता क्योंकि इसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता की स्थिति नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी विवाह और कार्य समझौते में स्वतंत्रता और समानता को प्राथमिकता दी जाती है। यहाँ पर विवाह को शर्तों पर आधारित किया गया है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता के खिलाफ प्रतीत होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से आलोचना योग्य है, क्योंकि यह एक शर्तपूर्ण और थोड़ी विवशता से भरी स्थिति प्रस्तुत करती है, जो भारतीय समाज में स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों के खिलाफ है।**

आयत 28

आयत का अनुवाद:
"मूसा ने कहा ये मेरे और आप के दरम्यिान (मुहाएदा) है दोनों मुद्दतों मे से मै जो भी पूरी कर दूँ (मुझे एख़्तियार है) फिर मुझ पर जब्र और ज़्यादती (देने का आपको हक़) नहीं और हम आप जो कुछ कर रहे हैं (उसका) ख़ुदा गवाह है।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापकता (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने शुएब से यह समझौता किया कि वह जो भी समय पूरा करेगा, उसमें कोई जबरदस्ती नहीं होनी चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह कथन न्याय के सिद्धांतों के अनुसार उचित है, क्योंकि यह किसी भी प्रकार के दबाव और अत्याचार के खिलाफ है। यह एक सामान्य न्यायिक सिद्धांत है कि किसी को जबरदस्ती या अत्याचार से बचाया जाए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय न्यायशास्त्र में, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और बिना दबाव के निर्णय लेने को प्रमुख माना जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत न्यायिक दृष्टिकोण से तार्किक और न्यायसंगत प्रतीत होती है, क्योंकि इसमें बिना दबाव के स्वतंत्र रूप से समझौता करने की बात की गई है।**

आयत 29

आयत का अनुवाद:

"ग़रज़ मूसा का छोटी लड़की से निकाह हो गया और रहने लगे फिर जब मूसा ने अपनी (दस बरस की) मुद्दत पूरी की और बीवी को लेकर चले तो अँधेरी रात जाड़ों के दिन राह भूल गए और बीबी सफ़ूरा को दर्द ज़ेह शुरु हुआ (इतने में) कोहेतूर की तरफ़ आग दिखायी दी तो अपने लड़के बालों से कहा तुम लोग ठहरो मैने यक़ीनन आग देखी है (मै वहाँ जाता हूँ) क्या अजब है वहाँ से (रास्ते की) कुछ ख़बर लाऊँ या आग की कोई चिंगारी (लेता आऊँ) ताकि तुम लोग तापो।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने अपनी पत्नी के साथ यात्रा की और रास्ता भटकने के बाद आग देखी, जिससे उसने आग से मार्ग की जानकारी लेने की कोशिश की।
- हेतु (Reason): यह एक सामान्य स्थिति है, जिसमें किसी व्यक्ति को अपनी यात्रा के दौरान मार्ग में कोई असुविधा होती है और वह किसी संकेत से मार्ग को खोजता है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, यह एक व्यावहारिक उदाहरण है कि जब कोई मार्गदर्शन नहीं मिलता, तो व्यक्ति अन्य संकेतों से मार्ग खोजने की कोशिश करता है। यह मानवीय स्वभाव और व्यावहारिकता का उदाहरण है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत तार्किक दृष्टिकोण से सही प्रतीत होती है, क्योंकि इसमें एक सामान्य मानव स्थिति और व्यवहार का वर्णन किया गया है।

आयत 30

आयत का अनुवाद:

"ग़रज़ जब मूसा आग के पास आए तो मैदान के दाहिने किनारे से इस मुबारक जगह में एक दरख़्त से उन्हें आवाज़ आयी कि ऐ मूसा इसमें शक नहीं कि मै ही अल्लाह सारे जहाँ का पालने वाला हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा को आग से आवाज आई, जिसमें बताया गया कि अल्लाह ही सारे जहाँ का पालन करने वाला है।

- **हेतु (Reason): यह आयत विश्वास पर आधारित है, और इसमें कोई तर्क नहीं दिया गया कि यह वास्तविकता के रूप में कैसे घटित हुआ। इस प्रकार का अनुभव न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, किसी भी दिव्य संकेत या आवाज को प्रमाण के बिना स्वीकार नहीं किया जाता। इसे तर्कसंगत रूप से व्याख्यायित किया जाना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत आस्था पर आधारित है और न्याय दर्शन के तर्कसंगत सिद्धांतों के अनुसार इसकी व्याख्या नहीं की जा सकती।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
26	प्रमेय	यह तार्किक और न्यायसंगत है क्योंकि यह कार्य चयन पर आधारित है।
27	हेतु	शर्तपूर्ण समझौते की आलोचना, यह स्वतंत्रता के सिद्धांत के खिलाफ है।
28	व्यापकता	बिना दबाव के समझौता, न्यायसंगत और तार्किक है।
29	प्रमेय	यह व्यावहारिक रूप से सही प्रतीत होता है, कोई विशेष आलोचना नहीं है।
30	प्रमेय	विश्वास पर आधारित है, जिसे न्याय दर्शन के सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कई बार पारंपरिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण से तर्क और न्याय के सिद्धांतों का पालन किया गया है, जबकि कुछ आयतें विश्वास और आस्था पर आधारित हैं, जिनका न्याय दर्शन के सिद्धांतों से प्रमाणिकता से मूल्यांकन करना कठिन है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 31

आयत का अनुवाद:
"और यह (भी आवाज़ आयी) कि तुम अपनी छड़ी (ज़मीन पर) डाल दो फिर जब (डाल दिया तो) देखा कि वह इस तरह बल खा रही है कि गोया वह (ज़िन्दा) अजदहा है तो पीठ फेरके भागे और पीछे मुड़कर भी न देखा (तो हमने फरमाया) ऐ मूसा आगे आओ और डरो नहीं तुम पर हर तरह अमन व अमान में हो।"

चुना गया न्याय तत्व:
उदाहरण (Udaharana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा की छड़ी को जब फेंका गया, तो वह एक जीवित अजदहा के रूप में बदल गई।
- हेतु (Reason): यह आयत एक प्रकार के चमत्कारी कार्य को दिखाती है, जो भारतीय दर्शन के न्याय के दृष्टिकोण से चुनौतीपूर्ण है। चमत्कारी घटनाएँ सामान्य जीवन और प्राकृतिक नियमों से बाहर होती हैं, जिन्हें प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में कोई भी घटना, जो तार्किक रूप से प्रमाणित न हो, उसे सही मानने से पहले उसे सत्यापित करना आवश्यक होता है। यहाँ, यह चमत्कारी घटना बिना तर्क या प्रमाण के प्रस्तुत की जा रही है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत भारतीय न्याय दर्शन के अनुसार आलोचना योग्य है, क्योंकि यह एक ऐसी घटना का वर्णन करती है जिसे सामान्य तर्क और प्रमाण से समझाना कठिन है।

आयत 32

आयत का अनुवाद:
"(अच्छा और लो) अपना हाथ गरेबान में डालो (और निकाल लो) तो सफेद बुर्राक़ होकर बेऐब निकल आया और ख़ौफ़ की (वजह) से अपने बाज़ू अपनी तरफ़ समेट लो (ताकि ख़ौफ जाता रहे) ग़रज़ ये दोनों (असा व यदे बैज़ा) तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से (तुम्हारी नुबूवत की) दो दलीलें फ़िरऔन और उसके दरबार के सरदारों के वास्ते हैं और इसमें शक नहीं कि वह बदकार लोग थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: मूसा का हाथ जब उनकी चादर में डाला गया तो वह सफेद और चमकदार हो गया, जिससे यह संकेत दिया गया कि यह परमेश्वर का चमत्कारी संकेत था।
- **हेतु (Reason)**: यह घटना किसी व्यक्तिगत या प्राकृतिक प्रमाण पर आधारित नहीं है, बल्कि इसे एक दिव्य संकेत के रूप में प्रस्तुत किया गया है। भारतीय दर्शन में, किसी भी प्रकार के दिव्य संकेत को केवल विश्वास पर आधारित माना जाता है, लेकिन इसका तार्किक प्रमाण नहीं होता।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दर्शन में, जब कोई घटना वास्तविकता से परे हो, जैसे हाथ का चमकना, उसे सामान्यतः प्रमाण या तर्क से नहीं जोड़ा जाता। इससे इस आयत का न्यायशास्त्र के दृष्टिकोण से कोई व्यावहारिक या तार्किक आधार नहीं है।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत प्रमाण और तर्क के दृष्टिकोण से आलोचना योग्य है, क्योंकि इसमें दिव्य चमत्कारों का उल्लेख है, जिन्हें सिद्ध करने के लिए कोई भौतिक प्रमाण नहीं है।

आयत 33

आयत का अनुवाद:
"मूसा ने अर्ज़ की परवरदिगार मैने उनमें से एक शख़्स को मार डाला था तो मै डरता हूँ कहीं (उसके बदले) मुझे न मार डालें।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition)**: मूसा ने डर व्यक्त किया कि उन्होंने एक व्यक्ति को मारा था, और अब वह डरते हैं कि कहीं उन्हें उसी के बदले न मारा जाए।
- **हेतु (Reason)**: यह डर स्वाभाविक है, और यह मानसिक स्थिति भारतीय न्यायशास्त्र में भी उचित मानी जाती है। किसी व्यक्ति को अपनी गलतियों का भय होना एक सामान्य मनोविज्ञान है।
- **उदाहरण (Example)**: भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण में, यह एक सामान्य मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपने पिछले कार्यों के परिणाम से डरता है।
- **निगमन (Conclusion)**: यह आयत तार्किक दृष्टिकोण से उपयुक्त है, क्योंकि यह एक सामान्य मानव भावना का संकेत देती है, जिसे भारतीय दर्शन में भी मान्यता प्राप्त है।

आयत 34

आयत का अनुवाद:
"और मेरा भाई हारुन वह मुझसे (ज़बान में ज़्यादा) फ़सीह है तो तू उसे मेरे साथ मेरा मददगार बनाकर भेज कि

वह मेरी तसदीक करे क्योंकि यक़ीनन मै इस बात से डरता हूँ कि मुझे वह लोग झुठला देंगे (तो उनके जवाब के लिए गोयाइ की ज़रुरत है)।”

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने अपने भाई हारुन को अपने साथ भेजने का अनुरोध किया, क्योंकि वह उनसे अधिक प्रभावी और स्पष्ट वक्ता थे।
- हेतु (Reason): यह अनुरोध तार्किक है, क्योंकि जब कोई व्यक्ति स्वयं अपनी बात सही ढंग से नहीं रख सकता, तो वह अपने सक्षम साथी से मदद लेता है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी इस प्रकार की स्थिति को समझा जाता है, जहाँ व्यक्ति अपनी कमजोरियों को स्वीकार करता है और सहायता प्राप्त करता है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत तार्किक दृष्टिकोण से सही है, क्योंकि इसमें मनुष्य की सामान्य स्थिति को समझते हुए दूसरों से सहायता लेने की बात की गई है।

आयत 35

आयत का अनुवाद:
”फ़रमाया अच्छा हम अनक़रीब तुम्हारे भाई की वजह से तुम्हारे बाज़ू क़वी कर देगें और तुम दोनों को ऐसा ग़लबा अता करेंगें कि फ़िरऔनी लोग तुम दोनों तक हमारे मौजिज़े की वजह से पहुँच भी न सकेंगे लो जाओ तुम दोनो और तुम्हारे पैरवी करने वाले गालि़ब रहेंगे।”

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापकता (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): भगवान ने मूसा और हारुन को शक्ति दी और उन्हें विश्वास दिलाया कि वे अपने मिशन में सफल होंगे।
- हेतु (Reason): यह एक प्रकार का दिव्य आश्वासन है जो विश्वास और धार्मिकता पर आधारित है, लेकिन भारतीय न्यायशास्त्र में इसका प्रमाण नहीं होता।

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जब किसी व्यक्ति को दिव्य या अदृश्य शक्ति से मदद का आश्वासन मिलता है, तो इसे विश्वास के रूप में लिया जाता है, लेकिन इसके तार्किक प्रमाण की कमी होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत विश्वास और आस्था पर आधारित है, लेकिन न्याय दर्शन के दृष्टिकोण से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
31	उदाहरण	चमत्कारी घटनाएँ प्रमाण के बिना प्रस्तुत की गईं, न्यायशास्त्र से इसे प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
32	प्रमेय	दिव्य चमत्कारी संकेत, जो न्यायशास्त्र के सिद्धांतों से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
33	हेतु	स्वाभाविक मानव डर, तार्किक दृष्टिकोण से उपयुक्त।
34	हेतु	उचित और तार्किक अनुरोध, दूसरे से मदद लेने की सामान्य स्थिति।
35	व्यापकता	दिव्य आश्वासन, विश्वास पर आधारित, प्रमाण नहीं।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कुछ तार्किक और स्वाभाविक पहलू हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों से मेल खाते हैं, जबकि अधिकांश आयतें विश्वास और दिव्य चमत्कारों पर आधारित हैं, जिनका न्यायशास्त्र के सिद्धांतों से मूल्यांकन करना कठिन है।

आयतों का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 36

आयत का अनुवाद:
"ग़रज़ जब मूसा हमारे वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर उनके पास आए तो वह लोग कहने लगे कि ये तो बस

अपने दिल का गढ़ा हुआ जादू है और हमने तो अपने अगले बाप दादाओं (के ज़माने) में ऐसी बात सुनी भी नही।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा के चमत्कारी चिह्नों को फिरौन और उसके दरबारियों ने जादू समझा, जो उनके तर्क और विश्वास के हिसाब से अस्वीकार्य था।**
- **हेतु (Reason): यह प्रतिक्रिया दिखाती है कि किसी भी नई और असामान्य घटना को लोग अपनी समझ और पूर्व अनुभव के आधार पर तर्क करने की कोशिश करते हैं। भारतीय न्यायशास्त्र के अनुसार, जब कोई चमत्कारी घटना घटती है, तो उसका समाधान और व्याख्या पहले से ज्ञात सत्य और अनुभव के माध्यम से किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जब कोई नया और अद्भुत कार्य होता है, तो लोग उसे अपने पारंपरिक विश्वासों और ज्ञान के संदर्भ में समझने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार, यह प्रतिक्रिया कोई नई बात नहीं है, बल्कि सामान्य है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क और सामान्य मानव मानसिकता के हिसाब से सही है, क्योंकि लोग असामान्य घटनाओं को अपनी समझ से मिलाने का प्रयास करते हैं।**

आयत 37

आयत का अनुवाद:
"मूसा ने कहा मेरा परवरदिगार उस शख़्स से ख़ूब वाक़िफ़ है जो उसकी बारगाह से हिदायत लेकर आया है और उस शख़्स से भी जिसके लिए आख़िरत का घर है इसमें तो शक ही नहीं कि ज़ालिम लोग कामयाब नहीं होते।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): मूसा ने परमेश्वर का प्रमाण दिया कि वह खुद और उनके साथ आने वाले लोग सही मार्ग पर हैं, और ज़ालिम लोग कभी सफल नहीं हो सकते।**

- हेतु (Reason): यह प्रमाण स्वयं परमेश्वर के ज्ञान और मार्गदर्शन पर आधारित है। यह तर्क न्यायशास्त्र के दृष्टिकोण से मजबूत है, क्योंकि यह एक दिव्य प्रमाण पर आधारित है, जो किसी शारीरिक या भौतिक प्रमाण से परे है।
- उदाहरण (Example): भारतीय न्याय दर्शन में प्रमाण को सत्य के प्रकाश के रूप में देखा जाता है। जब कोई दिव्य प्रमाण प्रस्तुत होता है, तो उसे विश्वास और आस्था के आधार पर लिया जाता है, लेकिन इसका तार्किक प्रमाण नहीं होता।
- निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण पर आधारित है, लेकिन इसे न्यायशास्त्र के दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है क्योंकि दिव्य प्रमाण को केवल विश्वास से स्वीकार किया जा सकता है, जबकि भौतिक प्रमाण से यह सिद्ध नहीं किया जा सकता।

आयत 38

आयत का अनुवाद:
"और फ़िरऔन ने कहा ऐ मेरे दरबार के सरदारों मुझ को तो अपने सिवा तुम्हारा कोई परवरदिगार मालूम नही होता (और मूसा दूसरे को ख़ुदा बताता है) तो ऐ हामान (वज़ीर फ़िरऔन) तुम मेरे वास्ते मिट्टी (की ईटों) का पजावा सुलगाओ फिर मेरे वास्ते एक पुख़्ता महल तैयार कराओ ताकि मै (उस पर चढ़ कर) मूसा के ख़ुदा को देंखू और मै तो यक़ीनन मूसा को झूठा समझता हूँ।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): फिरौन का तर्क था कि वह खुद को ही परमेश्वर मानता है और मूसा के परमेश्वर के अस्तित्व को नकारता है।
- हेतु (Reason): यह तर्क एक मानसिक स्थिति को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति अपने अहंकार और सत्ता के कारण सत्य और ईश्वर के अस्तित्व को नकारता है। भारतीय दर्शन में, जब कोई व्यक्ति अपने अहंकार में अंधा हो जाता है, तो वह सत्य को स्वीकार करने में असमर्थ होता है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में अहंकार और आत्ममोह की स्थिति में व्यक्ति सत्य को नकारता है, जैसे फिरौन ने परमेश्वर को नकारा और खुद को सर्वोच्च माना। यह उदाहरण भारतीय दर्शन के अहंकार और भ्रम के सिद्धांतों के अनुरूप है।
- निगमन (Conclusion): यह आयत न्यायशास्त्र के दृष्टिकोण से सही है, क्योंकि यह मनुष्य के अहंकार और भ्रांतियों को दिखाती है, जो सत्य को स्वीकार करने से उसे रोकते हैं।

आयत 39

आयत का अनुवाद:
"और फ़िरऔन और उसके लशकर ने रुए ज़मीन में नाहक़ सर उठाया था और उन लोगों ने समझ लिया था कि हमारी बारगाह मे वह कभी पलट कर नही आएँगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्यापकता (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फिरौन और उसके अनुयायी ज़मीन पर अहंकार दिखा रहे थे, और उन्हें यह विश्वास था कि वे कभी पराजित नहीं होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह आयत दिखाती है कि अहंकार और शक्ति का दंभ व्यक्ति को अपनी वास्तविक स्थिति और परिणामों से अज्ञात बना देता है। भारतीय न्याय दर्शन में, यह स्थिति अक्सर अहंकार के परिणामस्वरूप नष्ट हो जाने की प्रतीक है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जब कोई व्यक्ति अहंकार में फंसकर सोचता है कि वह कभी पराजित नहीं होगा, तो अंत में उसे नष्ट होने के लिए तैयार किया जाता है, जैसे फिरौन को नष्ट किया गया। यह व्यापकता के सिद्धांत से मेल खाता है, जहाँ किसी भी प्रकार का अहंकार अंत में नष्ट हो जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भारतीय दर्शन के सिद्धांतों से मेल खाती है, जो अहंकार के परिणामस्वरूप नष्ट होने को दिखाती है।**

आयत 40

आयत का अनुवाद:
"तो हमने उसको और उसके लशकर को ले डाला फिर उन सबको दरिया में डाल दिया तो (ऐ रसूल) ज़रा देखों तो कि ज़ालिमों का कैसा बुरा अन्जाम हुआ।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): फिरौन और उसके अनुयायियों को अंत में समुद्र में डुबो दिया गया, और यह उनकी दुष्टता का परिणाम था।**

- **हेतु (Reason): यह घटना भारतीय न्याय दर्शन में कर्म और परिणाम के सिद्धांत को दर्शाती है। किसी भी व्यक्ति द्वारा किए गए कर्मों का फल उसे अवश्य मिलता है। यह आयत इस सिद्धांत को प्रमाणित करती है कि ज़ालिमों को अंततः उनके कर्मों का दंड मिलता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार, दुष्टता और अहंकार का परिणाम हमेशा नाश होता है, जैसा फिरौन और उसके अनुयायियों के साथ हुआ।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत भारतीय न्यायशास्त्र के सिद्धांतों के अनुरूप है, क्योंकि यह कर्म और परिणाम के सिद्धांत को दर्शाती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
36	हेतु	असामान्य घटनाओं को समझने के लिए पूर्व अनुभवों के आधार पर तर्क किया गया।
37	प्रमाण	दिव्य प्रमाण पर आधारित है, जो विश्वास से अधिक प्रमाणित नहीं किया जा सकता।
38	हेतु	अहंकार के कारण सत्य को नकारने की मानसिकता।
39	व्यापकता	अहंकार के नष्ट होने की अवधारणा, जो न्यायशास्त्र में सत्य है।
40	प्रमाण	कर्मफल के सिद्धांत के अनुसार दुष्टों को उनके कर्मों का परिणाम मिलता है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में कुछ तर्क और सामान्य मानवीय मानसिकताएँ हैं, जो न्याय दर्शन के सिद्धांतों के अनुरूप हैं, जैसे अहंकार का परिणाम और कर्मफल का सिद्धांत। लेकिन कुछ आयतें दिव्य प्रमाण और चमत्कारी घटनाओं पर आधारित हैं, जिन्हें न्यायशास्त्र के दृष्टिकोण से चुनौती दी जा सकती है।

आयत 41

आयत का अनुवादः

"और हमने उनको (गुमराहों का) पेशवा बना दिया कि (लोगों को) जहन्नुम की तरफ बुलाते हैं और क़यामत के दिन (ऐसे बेकस होगें कि) उनको किसी तरह की मदद न दी जाएगी।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में कहा गया है कि गुमराह लोग क़यामत के दिन मदद से वंचित रहेंगे। यह दावा किया गया है कि इन गुमराह लोगों को कोई सहायता नहीं दी जाएगी और यह उनकी गलती का परिणाम होगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि गुमराही की वजह से किसी व्यक्ति को मदद नहीं मिल सकती। परंतु, यह विचार सार्वभौमिक नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति की गुमराही या पाप की स्थिति विभिन्न हो सकती है, और इसके आधार पर सभी को एक ही परिणाम देना न्यायसंगत नहीं है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में जैसे भगवद गीता के अध्याय 9, श्लोक 22 में कहा गया है कि भगवान अपने भक्तों को उनकी श्रद्धा और विश्वास के आधार पर सहायता प्रदान करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि न्याय का सिद्धांत केवल एक सामान्य शास्त्र के आधार पर नहीं हो सकता, बल्कि व्यक्ति की भावना, नीयत और क्रिया को ध्यान में रखते हुए उसे परखा जाना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत को नकारती है, क्योंकि सभी गुमराह लोग एक जैसे नहीं होते। हर व्यक्ति की आत्मा का स्तर अलग होता है और प्रत्येक की गलतियों के परिणाम भी भिन्न हो सकते हैं। एक सार्वभौमिक निष्कर्ष के रूप में इसे लागू नहीं किया जा सकता।

आयत 42
आयत का अनुवाद:
"और हमने दुनिया में भी तो लानत उन के पीछे लगा दी है और क़यामत के दिन उनके चेहरे बिगाड़ दिए जायेंगे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि गुमराहों को न केवल क़यामत में बल्कि इस दुनिया में भी लानत और अपमान मिलेगा।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रमेय (साक्ष्य) के सिद्धांत से मेल नहीं खाता है। गुमराह लोगों को उनकी गलती के लिए सार्वभौमिक रूप से लानत देना बिना किसी पक्का प्रमाण के कैसे संभव है? क्या यह सब व्यक्ति की स्थिति के आधार पर नहीं होना चाहिए?

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में कर्म का सिद्धांत यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों का फल उसी के द्वारा किया गया कार्य होता है। भगवान की इच्छा और उपदेश केवल व्यक्ति को सिखाने और उसे सुधारने के लिए होते हैं, न कि उसे बदनाम करने के लिए। इस प्रकार, लानत का विचार कर्म और धर्म के सिद्धांत से मेल नहीं खाता।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक सामान्यीकृत दृष्टिकोण अपनाती है, जबकि न्याय दर्शन के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के कर्म और स्थिति को ध्यान में रखते हुए ही उसे उपयुक्त परिणाम मिलना चाहिए। इसलिए, यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

आयत 43
आयत का अनुवाद:
"और हमने बहुतेरी अगली उम्मतों को हलाक कर डाला उसके बाद मूसा को किताब (तौरैत) अता की जो लोगों के लिए अजसरतापा बसीरत और हिदायत और रहमत थी ताकि वह लोग इबरत व नसीहत हासिल करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि मूसा को किताब दी गई थी ताकि लोग उससे शिक्षा और हिदायत प्राप्त करें।

- **हेतु (Reason):**
  यह कथन उचित है कि यदि किसी समुदाय को सही मार्ग पर चलने के लिए हिदायत दी जाती है, तो यह उनके लिए लाभकारी हो सकती है। लेकिन, इस आयत में यह तर्क और कारण गुम हो जाता है। कई संस्कृतियों में अन्य विद्वान और विचारक भी थे जिन्होंने सही मार्ग पर चलने की शिक्षा दी, जैसे भारतीय संतों ने जीवन के मार्गदर्शन के लिए उपदेश दिए।

- **उदाहरण (Example)**:
  भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग और भक्ति के माध्यम से मार्गदर्शन दिया, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए सार्वभौमिक रूप से लाभकारी है। यहाँ भी, हिदायत केवल एक शख़्स पर निर्भर नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को जीवन की सच्चाई सीखने का अवसर मिलना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत एक विशिष्ट संदर्भ में दी गई हिदायत को सार्वभौमिक रूप से लागू करने का प्रयास करती है, जो न्याय दर्शन के हेतु के सिद्धांत के खिलाफ है, क्योंकि हर व्यक्ति को अपनी आस्था, परंपरा और सत्य को समझने का अवसर दिया जाना चाहिए।

आयत 44
आयत का अनुवाद:
"और (ऐ रसूल) जिस वक़्त हमने मूसा के पास अपना हुक्म भेजा था तो तुम (तूर के) मग़रिबी जानिब मौजूद न थे और न तुम उन वाक़्यात को चश्मदीद देखने वालों में से थे।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि मूसा के समय के घटनाओं को न तो पैगंबर देख सकते थे, न ही उनकी उपस्थिति में थे।

- **हेतु (Reason):**
  यह आयत प्रमाण की आवश्यकता को नजरअंदाज करती है। यहाँ यह कहा जा रहा है कि पैगंबर के पास ज्ञान आया, लेकिन बिना साक्ष्य के यह दावा किया जाता है। किसी घटना का प्रमाण केवल घटनाओं के सही गवाह से प्राप्त किया जा सकता है।

- **उदाहरण (Example)**:
  वेदों में किसी भी घटना का साक्ष्य मात्र एक व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि सामूहिक अनुभव और प्रमाण द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। यही कारण है कि वेदों और अन्य हिन्दू शास्त्रों में ज्ञान को संप्रेषित करने के लिए प्रमाण के रूप में गवाहों का भी उल्लेख होता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि यहां कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया और केवल दावे किए गए हैं।

आयत 45

आयत का अनुवाद:

"मगर हमने (मूसा के बाद) बहुतेरी उम्मतें पैदा की फिर उन पर एक ज़माना दराज़ गुज़र गया और न तुम मदैन के लोगों में रहे थे कि उनके सामने हमारी आयते पढ़ते (और न तुम को उन के हालात मालूम होते) मगर हम तो (तुमको) पैग़म्बर बनाकर भेजने वाले थे।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि पैगंबर को लोगों के हालात से अनजान रखा गया था और फिर उनको भेजा गया था।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क सत्य के खोज में बाधा उत्पन्न करता है, क्योंकि ज्ञान का संप्रेषण तब तक प्रभावी नहीं हो सकता जब तक उसे प्रमाणित नहीं किया जाता।

- **उदाहरण (Example):**
 वेदों में इस तरह के ज्ञान को प्रमाणित किया जाता है और हर कोई उस ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। यह एक सार्वभौमिक सिद्धांत है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्रमाण के सिद्धांत का उल्लंघन करती है, क्योंकि बिना किसी साक्ष्य और गवाह के इस तरह के दावे किए जाते हैं।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
41	**व्याप्ति**	**गुमराहों को समान रूप से सजा देना न्यायसंगत नहीं है।**
42	**प्रमाण**	**बिना प्रमाण के सार्वभौमिक लानत देना अनुचित है।**
43	**हेतू**	**हिदायत केवल एक व्यक्ति पर आधारित नहीं हो सकती।**
44	**प्रमाण**	**दावे बिना प्रमाण के प्रस्तुत किए गए हैं।**
45	**प्रमाण**	**साक्ष्य के बिना ज्ञान के हस्तांतरण का दावा खंडित है।**

समग्र निष्कर्ष:
 इन आयतों में न्याय दर्शन के सिद्धांतों जैसे व्याप्ति, प्रमाण, और हेतु का उल्लंघन किया गया है। इन दावों को बिना साक्ष्य और तर्क के प्रस्तुत किया गया है, जो कि विश्वसनीय नहीं हैं और सभी मानवता के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकते।

आयत 46
 आयत का अनुवाद:
 "और न तुम तूर की किसी जानिब उस वक़्त मौजूद थे जब हमने (मूसा को) आवाज़ दी थी (ताकि तुम देखते)

मगर ये तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी है ताकि तुम उन लोगों को जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला आया ही नहीं डराओ ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें।"

चुना गया न्याय तत्व:
प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह कहती है कि मूसा के समय के घटनाओं को देखे बिना, पैगंबर मोहम्मद को भेजा गया है ताकि वह लोगों को नसीहत दे सकें।
- **हेतु (Reason):**
 इसमें दावा किया गया है कि यह पैगंबर की मौजूदगी और संदेश से पहले लोगों को किसी प्रकार का चेतावनी या उपदेश नहीं मिला था। यह ठीक प्रतीत होता है, लेकिन क्या यह सत्य है कि केवल एक पैगंबर को भेजने से ही सही दिशा में बदलाव लाया जा सकता है?
- **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में, जैसे भगवद गीता के श्लोक 4.7 में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि जब भी धर्म की हानि होती है, तब भगवान अपना अवतार लेते हैं। इसका अर्थ है कि सभी समयों में धर्म की रक्षा के लिए मार्गदर्शन और उपदेश की आवश्यकता होती है, और यह किसी एक पैगंबर पर निर्भर नहीं है।
- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत एक ही समय में प्रकट होने वाले प्रमेय को स्वीकार नहीं करती है। प्रत्येक समय और स्थान के लिए उपदेश की आवश्यकता होती है, और यह केवल एक व्यक्ति या एक पैगंबर के ऊपर निर्भर नहीं किया जा सकता। इसलिए, यह सन्देश केवल विशेष काल और संदर्भ में ही लागू हो सकता है।

आयत 47
आयत का अनुवाद:
"और अगर ये नहीं होता कि जब उन पर उनकी अगली करतूतों की बदौलत कोई मुसीबत पड़ती तो बेसाख़्ता कह बैठते कि परवरदिगार तूने हमारे पास कोई पैग़म्बर क्यों न भेजा कि हम तेरे हुक्मों पर चलते और इमानदारों में होते (तो हम तुमको न भेजते)।"

चुना गया न्याय तत्व:
हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  इस आयत में यह कहा गया है कि जब लोगों को मुसीबतों का सामना हुआ तो वे भगवान से एक पैगंबर की मांग करते थे।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि लोगों की गलतियाँ और कठिनाईयों का कारण था कि वे पैगंबर को स्वीकारने में संकोच करते थे। लेकिन, क्या यह तर्क सही है? क्या किसी व्यक्ति का विश्वास केवल कठिनाइयों के समय में ही परीक्षण होना चाहिए?

- **उदाहरण (Example):**
  हिंदू धर्म में धर्मग्रंथों जैसे श्रीमद्भगवद गीता में भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि वे किसी भी परिस्थिति में धर्म का पालन करें, और ईश्वर पर विश्वास रखें। यह दर्शाता है कि धर्म और विश्वास का मार्ग केवल संकट के समय पर निर्भर नहीं होता, बल्कि यह निरंतर और अखंडित रहना चाहिए।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत हेतु के सिद्धांत में दोष प्रस्तुत करती है, क्योंकि किसी व्यक्ति का विश्वास केवल कठिनाइयों और संकटों पर आधारित नहीं होना चाहिए। यह धर्म का आधार नहीं हो सकता, और लोग सही मार्ग पर चलने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए।

आयत 48
आयत का अनुवाद:
"मगर फिर जब हमारी बारगाह से (दीन) हक़ उनके पास पहुँचा तो कहने लगे जैसे (मौजिज़े) मूसा को अता हुए थे वैसे ही इस रसूल (मोहम्मद) को क्यों नहीं दिए गए? क्या जो मौजिज़े इससे पहले मूसा को अता हुए थे उनसे इन लोगों ने इन्कार न किया था? कुफ़्फ़ार तो ये भी कह गुज़रे कि ये दोनों के दोनों (तौरैत व क़ुरआन) जादू हैं कि बाहम एक दूसरे के मददगार हो गए हैं।"

चुना गया न्याय तत्व:
व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत यह कहती है कि कुछ लोग पैगंबर मोहम्मद से भी वही चमत्कार की उम्मीद करते थे जो मूसा से हुए थे और इस वजह से वे कुफ़्फ़ार (अविश्वासी) हो गए।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क व्याप्ति के सिद्धांत के खिलाफ है। यह मानने का कारण यह है कि पैगंबर के पास वही चमत्कार नहीं थे जो मूसा के पास थे, तो क्या इसका मतलब यह है कि लोग सच्चाई का पालन नहीं करेंगे? यह तर्क समय, संदर्भ और संदर्भ के परिवर्तन को नजरअंदाज करता है।

- **उदाहरण (Example):**
  भारतीय दर्शन में, भगवद गीता में श्री कृष्ण ने कहा कि वह हर युग में अलग-अलग रूपों में आते हैं, और हर युग में विभिन्न रूपों से ज्ञान और मार्गदर्शन दिया जाता है। यह दर्शाता है कि हर युग की आवश्यकता और परिस्थिति के आधार पर ही उपदेश और चमत्कारों का रूप बदलता है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत व्याप्ति के सिद्धांत से मेल नहीं खाती, क्योंकि हर समय और संदर्भ में चमत्कारों और उपदेशों का रूप बदलता है। प्रत्येक युग के संदर्भ में ईश्वर के संदेश का रूप अलग हो सकता है, इसलिए इसे सार्वभौमिक रूप से लागू करना गलत है।

आयत 49

आयत का अनुवाद:

"और ये भी कह चुके कि हम एब के मुन्किर हैं (ऐ रसूल) तुम (इन लोगों से) कह दो कि अगर सच्चे हो तो ख़ुदा की तरफ से एक ऐसी किताब जो इन दोनों से हिदायत में बेहतर हो ले आओ कि मैं भी उस पर चलूँ फिर अगर ये लोग (इस पर भी) न मानें तो समझ लो कि ये लोग बस अपनी हवा व हवस की पैरवी करते हैं और जो शख़्स ख़ुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी हवा व हवस की पैरवी करते हैं उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा बेशक ख़ुदा सरकश लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता।"

चुना गया न्याय तत्व:

प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
 यह आयत यह कहती है कि यदि लोग सही होते तो उन्हें एक बेहतर हिदायत दी जाती और वह उसकी स्वीकार्यता को नकारते नहीं।

- **हेतु (Reason):**
 यह तर्क प्रमाण के सिद्धांत से मेल नहीं खाता है। यहां यह तर्क किया जा रहा है कि केवल एक किताब या पैगंबर का संदेश ही सच्चाई का प्रमाण है, लेकिन क्या हर व्यक्ति का मार्गदर्शन एक किताब से ही होता है? क्या अन्य धार्मिक और दार्शनिक मार्गदर्शन उतना ही अमान्य होता है?

- **उदाहरण (Example):**
 भारतीय दर्शन में, संख्य योग और योग दर्शन जैसी विधाएँ आत्मा के सत्य और शांति की प्राप्ति के लिए वैकल्पिक मार्ग दिखाती हैं। क्या इन मार्गों को नकारा जा सकता है? प्रत्येक व्यक्ति के लिए सच्चाई का मार्ग अलग हो सकता है।

- **निगमन (Conclusion):**
 यह आयत प्रमाण के सिद्धांत को नजरअंदाज करती है। एक व्यक्ति का सत्य किसी अन्य व्यक्ति के सत्य से अलग हो सकता है, और यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
46	प्रमेय	उपदेश देने का आधार केवल एक पैगंबर पर निर्भर नहीं हो सकता।
47	हेतू	विश्वास केवल कठिनाइयों पर निर्भर नहीं होता, यह निरंतर होना चाहिए।
48	व्याप्ति	चमत्कारों का रूप हर समय और संदर्भ में अलग हो सकता है।
49	प्रमाण	सत्य का मार्ग एक किताब से निर्धारित नहीं किया जा सकता।

समग्र निष्कर्ष:
 इन आयतों में न्याय दर्शन के सिद्धांतों जैसे प्रमेय, हेतु, व्याप्ति, और प्रमाण का उल्लंघन किया गया है। हर

व्यक्ति और हर समय के संदर्भ में सच्चाई और मार्गदर्शन का रूप अलग हो सकता है, और यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।

आयत 50

आयत का अनुवाद:

"कि मैं भी उस पर चलूँ फिर अगर ये लोग (इस पर भी) न मानें तो समझ लो कि ये लोग बस अपनी हवा व हवस की पैरवी करते हैं और जो शख़्स ख़ुदा की हिदायत को छोड़ कर अपनी हवा व हवस की पैरवी करते हैं उससे ज़्यादा गुमराह कौन होगा, बेशक ख़ुदा सरकश लोगों को मंज़िल मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता।"

चुना गया न्याय तत्व:

हेतु (Reason)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):**
  यह आयत कहती है कि जो लोग ईश्वर की हिदायत को छोड़कर अपनी इच्छा और हवस का पालन करते हैं, वे अत्यंत गुमराह होते हैं, और ईश्वर उन्हें मंजिल तक नहीं पहुँचाते।

- **हेतु (Reason):**
  यह तर्क कहता है कि केवल ईश्वर की हिदायत ही सच्चा मार्ग है, और कोई भी व्यक्ति जो अपनी इच्छाओं का पालन करता है, वह गुमराह होता है। हालांकि, यह विचार हेतु के सिद्धांत से पूरी तरह मेल नहीं खाता है।

  - क्या यह सही नहीं है कि हर व्यक्ति की समझ और मनोवृत्तियाँ अलग होती हैं, और इसलिए उनकी राह अलग-अलग हो सकती है?
  - क्या यह सच नहीं है कि कई बार एक व्यक्ति अपनी इच्छाओं को नियंत्रित कर के सही रास्ते पर चलने का प्रयास करता है, जैसे कि भारतीय दर्शन में योग और संस्कार के सिद्धांत?

- **उदाहरण (Example):**

  - भगवद गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा था कि वह अपनी इच्छाओं और विचारों को संयमित कर, धर्म और आत्मा के उद्देश्य से जीवन जीने की कोशिश करें। यह मार्गदर्शन न केवल इच्छाओं को नकारने का है, बल्कि उन्हें सही दिशा में मोड़ने का है।
  - इसके अतिरिक्त, संख्य योग और योग दर्शन में यह भी कहा गया है कि इंद्रिय सुखों का त्याग केवल एक कदम है; आत्मा के शांति और समृद्धि के लिए मन और इंद्रियों को नियंत्रण में लाना आवश्यक है।

- **निगमन (Conclusion):**
  यह आयत हेतु के सिद्धांत से पूरी तरह मेल नहीं खाती है, क्योंकि यह केवल अपनी इच्छाओं को त्यागने के बजाय, उन्हें सही दिशा में मोड़ने की आवश्यकता को नकारती है। हर व्यक्ति का मार्ग अलग हो सकता है, और यह आवश्यक नहीं कि उसकी इच्छा हर समय गुमराह हो।

सारणी (आयत का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
50	**हेतू**	**केवल हवस और इच्छाओं को त्यागने से कोई व्यक्ति गुमराह नहीं होता, बल्कि उन्हें सही दिशा में मोड़ने की आवश्यकता होती है।**

समग्र निष्कर्ष:
इस आयत में हेतु के सिद्धांत का एकतरफा रूप प्रस्तुत किया गया है। यह मानना कि केवल अपनी इच्छाओं का पालन करने वाले लोग गुमराह होते हैं, एक सीमित दृष्टिकोण को दर्शाता है। वास्तविक जीवन में, व्यक्तियों की इच्छाएँ और रास्ते भिन्न हो सकते हैं, और उन्हें सही दिशा में मोड़ने की आवश्यकता होती है, न कि केवल त्यागने की।

आयत 51-55 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 51

आयत का अनुवाद: "और हम यक़ीनन लगातार (अपने एहकाम भेजकर) उनकी नसीहत करते रहे ताकि वह लोग नसीहत हासिल करें।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यहाँ यह दावा किया गया है कि ईश्वर ने लगातार अपनी नसीहत भेजी, ताकि लोग उससे हिदायत प्राप्त करें।**

- **हेतु (Reason): इस आयत में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि ईश्वर ने हमेशा अपनी नसीहत भेजी। हालांकि, यह दावा सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है, क्योंकि हर समुदाय या हर व्यक्ति के पास यह नसीहत नहीं पहुंची है।**
- **उदाहरण (Example): उदाहरण स्वरूप, भारतीय संस्कृति में ऋषि-मुनियों के माध्यम से ज्ञान का प्रसार हुआ, लेकिन कभी भी विशेष रूप से "नसीहत" के रूप में कोई दिव्य संदेश नहीं भेजा गया। ऐसे में, यह दवा भारतीय इतिहास और दर्शन से मेल नहीं खाता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमेय के दृष्टिकोण से खड़ी नहीं उतरती, क्योंकि यह सार्वभौमिक ज्ञान और नसीहत के बारे में बिना किसी प्रमाण के दावा करती है।**

आयत 52

आयत का अनुवाद: "जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब अता की है वह उस (क़ुरआन) पर इमान लाते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जिन लोगों को पहले किताब दी गई, वे कुरआन पर विश्वास करते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह आयत कुरआन के प्रचलन को आधार मानते हुए दावा करती है कि जो लोग पहले से धार्मिक पुस्तकें मानते थे, वे भी कुरआन को मानते हैं।**
- **उदाहरण (Example): हालांकि, भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्म जैसी परंपराएँ हैं, जो किसी भी "कुरआन" को नहीं मानतीं, और उन्होंने अपनी अलग धार्मिक पुस्तकों और शिक्षाओं के माध्यम से जीवन के सिद्धांतों को समझा।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत प्रमाण के दृष्टिकोण से कमजोर है, क्योंकि इसका दावा पूरी मानवता पर लागू नहीं होता है और यह अन्य धर्मों या धार्मिक पुस्तकों की स्थिति को नजरअंदाज करता है।**

आयत 53

आयत का अनुवाद: "और जब उनके सामने ये पढ़ा जाता है तो बोल उठते हैं कि हम तो इस पर इमान ला चुके बेशक ये ठीक है (और) हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है हम तो इसको पहले ही मानते थे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत बताती है कि लोग कुरआन को अपने पूर्व के विश्वास के अनुसार सही मानते हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क प्रस्तुत करती है कि लोगों का पहले से विश्वास होना एक कारण है कि वे कुरआन को सही मानते हैं। हालांकि, यह तर्क केवल भावनात्मक जुड़ाव को आधार बनाता है, न कि वास्तविक तर्क और प्रमाण पर।**
- **उदाहरण (Example): जब लोग किसी विशेष धर्म या विश्वास प्रणाली में जन्म लेते हैं, तो वे उसी के प्रति आस्थावान होते हैं, जो अक्सर तर्क की बजाय परंपरा पर आधारित होता है। यह कोई तर्कसंगत आधार नहीं है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत तर्क के बजाय परंपरागत विश्वास पर आधारित है और इसलिए यह सार्वभौमिक रूप से सही नहीं मानी जा सकती।**

आयत 54

आयत का अनुवाद: "यही वह लोग हैं जिन्हें (इनके आमाले ख़ैर की) दोहरी जज़ा दी जाएगी-चूँकि उन लोगों ने सब्र किया और बदी को नेकी से दफ़ा करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से (हमारी राह में) ख़र्च करते हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि अच्छे कर्म करने वालों को दोहरी सजा दी जाएगी।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क व्यक्त करती है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा अच्छे कार्य करने से उसे पवित्रता और दोहरी जज़ा मिलती है। हालांकि, यह तर्क व्याप्ति के दृष्टिकोण से गलत है, क्योंकि केवल अच्छे कार्यों के कारण सभी को एक समान पुरस्कार नहीं मिलता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन के अनुसार, कर्मों के आधार पर फल मिलता है, लेकिन यह कोई सार्वभौमिक नियम नहीं है। अच्छे कर्मों के साथ साथ सही आस्था भी महत्वपूर्ण होती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के दृष्टिकोण से दोषपूर्ण है क्योंकि यह सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं होती है और विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों के सिद्धांतों से मेल नहीं खाती।**

आयत 55

आयत का अनुवाद: "और जब किसी से कोई बुरी बात सुनी तो उससे किनारा कश रहे और साफ कह दिया कि हमारे वास्ते हमारी कारगुज़ारियाँ हैं और तुम्हारे वास्ते तुम्हारी कारस्तानियाँ (बस दूर ही से) तुम्हें सलाम है हम जाहिलो (की सोहबत) के ख़्वाहा नहीं।"

चुना गया न्याय तत्व: **उपमान (Upamana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि किसी से बुरी बात सुनने पर उससे किनारा कर लेना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क प्रस्तुत करती है कि बुरी बात सुनने पर अलग होना सही है, लेकिन यह विचार सार्वभौमिक नहीं है। कभी-कभी संवाद और समझ विकसित करना बेहतर होता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय परंपराओं में अहिंसा और संवाद का महत्व है, विशेषकर महात्मा गांधी और बुद्ध के सिद्धांतों में, जो यह मानते थे कि हर व्यक्ति के साथ शांति और समझ से व्यवहार करना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत उपमान के दृष्टिकोण से दोषपूर्ण है, क्योंकि यह केवल नकारात्मकता को बढ़ावा देती है और संवाद का मार्ग बंद कर देती है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
51	**प्रमेय**	**नसीहत का दावा प्रमाण से विहीन है।**
52	**प्रमाण**	**अन्य धर्मों और विश्वासों को नजरअंदाज किया गया।**
53	**हेतु**	**परंपरागत विश्वास पर आधारित तर्क, बिना प्रमाण के।**
54	**व्याप्ति**	**केवल अच्छे कर्मों से दोहरी जज़ा का दावा सार्वभौमिक नहीं है।**
55	**उपमान**	**बुरी बात से किनारा करने की सलाह संवाद और समझ के विपरीत है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में तर्क और प्रमाण के अभाव में कथनों की प्रस्तुति की गई है। यह सिद्धांत अन्य धर्मों और संस्कृतियों के दृष्टिकोण से मेल नहीं खाते और न्याय दर्शन के तत्वों के अनुसार ये सार्वभौमिक रूप से सटीक नहीं माने जा सकते।

आयत 56-60 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 56

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) बेशक तुम जिसे चाहो मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँच सकते मगर हाँ जिसे ख़ुदा चाहे मंज़िल मक़सूद तक पहुँचाए और वही हिदायत याफ़ता लोगों से ख़ूब वाक़िफ़ है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह दावा करती है कि ईश्वर ही किसी को मंजिल तक पहुँचाता है और वह ही हिदायत देने में सक्षम है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि केवल ईश्वर की इच्छा और कृपा से ही किसी व्यक्ति को सही मार्ग मिल सकता है। हालांकि, यह विचार सभी संदर्भों में लागू नहीं होता। उदाहरण के लिए, विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में, शिक्षा, तर्क, और अनुभव के माध्यम से मार्गदर्शन प्राप्त किया जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, मार्गदर्शन और शिक्षा का महत्व है, जैसे वेदांत और योग दर्शन में मनुष्य की स्वाधीनता और आत्मनिर्भरता को प्रमुख माना गया है। यह सिद्धांत ईश्वर की कृपा से अधिक, व्यक्ति की कड़ी मेहनत और तर्क पर आधारित है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में व्याप्ति का तत्व कमजोर है, क्योंकि यह केवल एक निश्चित धर्म और विश्वास प्रणाली में विश्वास करने वालों को ही सही मार्ग पर पहुँचने का श्रेय देती है, जबकि यह अनुभव और तर्क से मेल नहीं खाता।**

आयत 57

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) कुफ़्फ़ारे (मक्का) तुमसे कहते हैं कि अगर हम तुम्हारे साथ दीन हक़ की पैरवी करें तो हम अपने मुल्क से उचक लिए जाएँ (ये क्या बकते हैं) क्या हमने उन्हें हरम- ऐ- (मक्का) में जहाँ हर तरह का अमन है जगह नहीं दी वहाँ हर किस्म के फल रोज़ी के वास्ते हमारी बारगाह से खिंचे चले जाते हैं मगर बहुतेरे लोग नहीं जाते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर कुफ़्फ़ार मक्का इमान लाते, तो वे अपने घर से बाहर नहीं जाते।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क प्रस्तुत करता है कि मक्का में हर प्रकार की सुरक्षा और संसाधन उपलब्ध हैं, फिर भी लोग इमान नहीं लाते। यह तर्क बहुत सिमित है और यह स्थिति केवल एक विशेष स्थान के संदर्भ में लागू होती है।**
- **उदाहरण (Example): भारत में अनेक धर्म और सांस्कृतिक परंपराएँ हैं, जहाँ सुरक्षा और संसाधन होते हुए भी लोग अपनी आत्मा की शांति और सत्य की खोज के लिए किसी विशेष धर्म को नहीं अपनाते।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रमाण का तत्व पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यह तर्क एक विशेष भौतिक स्थिति को आधार बनाता है, और इसे सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता है।**

आयत 58

आयत का अनुवाद: "और हमने तो बहुतेरी बस्तियाँ बरबाद कर दी जो अपनी मइष्त (रोजी) में बहुत इतराहट से (ज़िन्दगी) बसर किया करती थीं-(तो देखो) ये उन ही के (उजड़े हुए) घर हैं जो उनके बाद फिर आबाद नहीं हुए मगर बहुत कम और (आख़िर) हम ही उनके (माल व असबाब के) वारिस हुए।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि जिन बस्तियों में लोग अत्यधिक ऐश्वर्य में जीवन बसर करते थे, उन्हें हमने नष्ट कर दिया और अब उनका माल हमारी संपत्ति बन गया।**
- **हेतु (Reason): इस तर्क में यह कारण बताया गया है कि बुरी स्थिति का कारण उन लोगों का अत्यधिक ऐश्वर्य था। हालांकि, यह तर्क बहुत साधारण है, क्योंकि किसी समाज की बर्बादी के पीछे केवल ऐश्वर्य का होना आवश्यक नहीं है; सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण भी प्रभावी हो सकते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय उपमहाद्वीप में भी विभिन्न शाही और ऐश्वर्यपूर्ण सभ्यताएँ आईं और उनके पतन के कई कारण थे, जैसे आंतरिक विघटन, बाहरी आक्रमण, और सामाजिक असमानताएँ।**

- **निगमन (Conclusion):** यह तर्क केवल एक कारण को आधार बनाता है और यह बहुत संकीर्ण दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, क्योंकि बर्बादी के पीछे कई और कारण हो सकते हैं।

आयत 59

आयत का अनुवाद: "और तुम्हारा परवरदिगार जब तक उन गाँव के सदर मक़ाम पर अपना पैग़म्बर न भेज ले और वह उनके सामने हमारी आयतें न पढ़ दे (उस वक़्त तक) बस्तियों को बरबाद नहीं कर दिया करता-और हम तो बस्तियों को बरबाद करते ही नहीं जब तक वहाँ के लोग ज़ालिम न हों।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** यह आयत यह कहती है कि बस्तियाँ तभी नष्ट की जाती हैं जब वहां के लोग ज़ालिम होते हैं, और जब तक किसी बस्ति में पैग़म्बर न भेजा जाए, तब तक नष्ट नहीं किया जाता।
- **हेतु (Reason):** इस तर्क में यह कहा गया है कि ज़ालिमों के द्वारा किए गए कर्मों के कारण बस्तियाँ नष्ट होती हैं। यह एक अत्यधिक सामान्यीकृत विचार है और इससे वास्तविक न्याय का सिद्धांत मेल नहीं खाता। हर समाज में अन्याय और जुल्म की पहचान करने के मापदंड भिन्न हो सकते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय समाज में कई बुराइयाँ थीं, जैसे जातिवाद, महिलाएँ और दलितों के प्रति भेदभाव, लेकिन इन समस्याओं को दूर करने के लिए समाज में व्यापक सुधार प्रयास किए गए थे, न कि बस्तियों को नष्ट किया गया।
- **निगमन (Conclusion):** यह आयत व्याप्ति के दृष्टिकोण से त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि यह सभी बस्तियों के लिए एक सामान्य सिद्धांत प्रस्तुत करती है, जबकि हर समाज की समस्याएँ अलग-अलग होती हैं और उन्हें विभिन्न तरीकों से हल किया जाता है।

आयत 60

आयत का अनुवाद: "और तुम लोगों को जो कुछ अता हुआ है तो दुनिया की (ज़रा सी) ज़िन्दगी का फ़ायदा और उसकी आराइष है और जो कुछ ख़ुदा के पास है वह उससे कही बेहतर और पाएदार है तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि जो कुछ भी मनुष्यों को इस दुनिया में प्राप्त है, वह अस्थायी है और जो ईश्वर के पास है, वह उससे कहीं बेहतर है।**
- **हेतु (Reason): इस तर्क में यह कहा गया है कि दुनिया की चीज़ें अस्थायी हैं और ईश्वर के पास जो है वह अधिक स्थायी और श्रेष्ठ है। यह तर्क अपेक्षाकृत सही हो सकता है, लेकिन यह तर्क केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह विचार है कि सांसारिक सुख अस्थायी होते हैं, और आत्मा की मुक्ति और निराकार ब्रह्म के साथ एकत्व को अंतिम लक्ष्य माना जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत उपमान के दृष्टिकोण से स्वीकार्य है, लेकिन यह केवल धार्मिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखती है और हर व्यक्ति के लिए यह दृष्टिकोण लागू नहीं होता है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
56	**व्याप्ति**	**केवल ईश्वर की कृपा पर आधारित तर्क, जो सार्वभौमिक नहीं है।**
57	**प्रमाण**	**भौतिक सुरक्षा और संसाधनों का तर्क, जो हर समुदाय पर लागू नहीं होता।**
58	**हेतु**	**बर्बादी के कारणों में एक ही तत्व को प्राथमिकता देना संकीर्ण दृष्टिकोण है।**
59	**व्याप्ति**	**ज़ालिम होने के सिद्धांत पर आधारित, जो हर समाज के संदर्भ में लागू नहीं होता।**
60	**उपमान**	**केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित, जो हर व्यक्ति पर लागू नहीं होता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दिए गए तर्क और सिद्धांत विभिन्न संदर्भों में लागू नहीं होते। धार्मिक दृष्टिकोण और ईश्वर के ऊपर विश्वास रखने वाले व्यक्तियों के लिए यह उपयुक्त हो सकता है, लेकिन इनका सार्वभौमिक तर्क से मेल नहीं खाता।

आयत 61-65 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 61

आयत का अनुवाद: "तो क्या वह शख़्स जिससे हमने (बेहेष्त का) अच्छा वायदा किया है और वह उसे पाकर रहेगा उस शख़्स के बराबर हो सकता है जिसे हमने दुनियावी ज़िन्दगी के (चन्द रोज़ा) फायदे अता किए हैं और फिर क़यामत के दिन (जवाब देही के वास्ते हमारे सामने) हाज़िर किए जाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि जो व्यक्ति ईश्वर से प्रतिज्ञा के अनुसार स्वर्ग प्राप्त करेगा, क्या वह व्यक्ति उस व्यक्ति के बराबर हो सकता है जिसे केवल सांसारिक लाभ मिले हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि केवल ईश्वर की कृपा से प्राप्त स्वर्गीय इनाम अनमोल है, जबकि सांसारिक लाभ तात्कालिक और क्षणिक होते हैं। यह विचार एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को दर्शाता है, लेकिन यह सार्वभौमिक नहीं है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोणों में, जैसे वेदांत में, सांसारिक सुखों को माया या असत्य माना जाता है, जबकि आत्मा की मुक्ति को सर्वोत्तम उद्देश्य माना जाता है। लेकिन यह दृष्टिकोण केवल धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, और हर व्यक्ति इसे स्वीकार नहीं करता।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के दृष्टिकोण से सही है, लेकिन यह केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को प्रमोट करती है, जिसे सभी समाजों में सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।**

आयत 62

आयत का अनुवाद: "और जिस दिन ख़ुदा उन कुफ़्फ़ार को पुकारेगा और पूछेगा कि जिनको तुम हमारा शरीक ख़्याल करते थे वह (आज) कहाँ हैं (ग़रज़ वह शरीक भी बुलाँए जाएँगे)।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन कुफ़्फ़ार से पूछा जाएगा कि उन्होंने जिने शरीक ठहराया था, वह कहां हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि ईश्वर के सामने सभी का उत्तरदायित्व तय होगा और वह सभी के द्वारा किए गए कार्यों का हिसाब लेंगे। यह धार्मिक विश्वास पर आधारित है, लेकिन यह तर्क सभी लोगों के लिए समान रूप से लागू नहीं होता क्योंकि लोग अपनी आध्यात्मिकता और विश्वासों को अलग-अलग तरीके से समझते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि योग और वेदांत, यह माना जाता है कि हर व्यक्ति की आस्था और कार्यों का हिसाब उनके कर्मों के आधार पर होता है, न कि किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा निर्धारित किए गए धार्मिक दृष्टिकोण के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रमाण का तत्व केवल एक धार्मिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है और यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है, क्योंकि विभिन्न संस्कृति और धर्मों में विचारधारा अलग-अलग हो सकती है।**

आयत 63

आयत का अनुवाद: "वह लोग जो हमारे अज़ाब के मुस्ताजिब हो चुके हैं कह देंगे कि परवरदिगार यही वह लोग हैं जिन्हें हमने गुमराह किया था जिस तरह हम ख़ुद गुमराह हुए उसी तरह हमने इनको गुमराह किया-अब हम तेरी बारगाह में (उनसे) दस्तबरदार होते हैं-ये लोग हमारी इबादत नहीं करते थे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि ग़लत मार्ग पर चलने वाले लोग यह कहेंगे कि हमने भी दूसरों को गुमराह किया था, जैसे कि हमें खुद गुमराह किया गया था।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि गुमराही केवल एक सामान्य प्रक्रिया है, जिसमें लोग दूसरों को भी अपनी गुमराही का शिकार बनाते हैं। यह तर्क उन लोगों की जिम्मेदारी को नकारता है जो गलत मार्ग पर जाते हैं और उन्हें अपने कर्मों का खामियाजा भुगतना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि कर्म सिद्धांत में यह माना जाता है कि हर व्यक्ति अपनी स्थिति और निर्णयों का जिम्मेदार होता है, चाहे वह दूसरों से प्रभावित हो या न हो। यहाँ पर तर्क किया जाता है कि किसी भी व्यक्ति के गलत कार्यों के लिए उसे स्वयं जिम्मेदार ठहराया जाता है।**

- **निगमन (Conclusion): इस आयत में दी गई तर्क की नींव कमजोर है, क्योंकि यह गुमराही को केवल एक सामूहिक या बाहरी प्रक्रिया के रूप में देखता है, जबकि यह व्यक्तिगत जिम्मेदारी और आत्मनिर्भरता का उल्लंघन करता है।**

आयत 64

आयत का अनुवाद: "और कहा जाएगा कि भला अपने उन शरीको को (जिन्हें तुम ख़ुदा समझते थे) बुलाओ तो ग़रज़ वह लोग उन्हें बुलाएँगे तो वह उन्हें जवाब तक नहीं देंगे और (अपनी आँखों से) अज़ाब को देखेंगें काश ये लोग (दुनिया में) राह पर आए होते।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमान (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि क़यामत के दिन वह लोग जिनकी पूजा की गई थी, उन्हें किसी समस्या के समाधान में शामिल नहीं किया जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह प्रस्तुत करता है कि जो लोग भगवान के रूप में पूजे गए थे, वे वास्तव में इस समय में उनकी कोई मदद नहीं कर सकते। यह तर्क भौतिक और मानसिक रूप से असंगत हो सकता है, क्योंकि विभिन्न धर्मों में देवता या धार्मिक प्रतीक को सहायता देने वाला माना जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय धर्मों में, जैसे हिंदू धर्म, देवताओं से प्रार्थना और उनसे मदद की उम्मीद की जाती है, और माना जाता है कि वे प्रायः अपने अनुयायियों की मदद करते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में उपमान का उपयोग किया गया है, लेकिन यह केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है और अन्य धार्मिक विचारधाराओं में यह लागू नहीं होता।**

आयत 65

आयत का अनुवाद: "और (वह दिन याद करो) जिस दिन ख़ुदा लोगों को पुकार कर पूछेगा कि तुम लोगों ने पैग़म्बरों को (उनके समझाने पर) क्या जवाब दिया।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत कहती है कि क़यामत के दिन हर व्यक्ति से यह पूछा जाएगा कि उसने पैग़म्बरों के संदेश को कैसे स्वीकार किया।**

- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि हर व्यक्ति को अपने कार्यों और विश्वासों के लिए उत्तरदायी ठहराया जाएगा। हालांकि, यह विचार धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भिन्न हो सकता है। एक व्यक्ति जिसे धार्मिक शिक्षाएँ नहीं मिलीं, उसे किस प्रकार उत्तरदायी ठहराया जा सकता है?**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण में, विशेषकर कर्मवाद में यह माना जाता है कि हर व्यक्ति के कर्मों का हिसाब उसके जीवन के आधार पर किया जाता है, न कि केवल किसी बाहरी विश्वास के आधार पर।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत में प्रमाण का तत्व केवल एक विशिष्ट धार्मिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है, जो सभी समाजों और संस्कृतियों में समान रूप से लागू नहीं होता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
61	**व्याप्ति**	**केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित तर्क, जो सभी समाजों पर लागू नहीं होता।**
62	**प्रमाण**	**केवल एक विशेष विश्वास प्रणाली पर आधारित तर्क, जो सार्वभौमिक नहीं है।**
63	**हेतु**	**गुमराही को सामूहिक प्रक्रिया के रूप में देखना, जो व्यक्तिगत जिम्मेदारी को नकारता है।**
64	**उपमान**	**केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित, जो अन्य संस्कृतियों में लागू नहीं होता।**
65	**प्रमाण**	**केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित, जो सार्वभौमिक नहीं है।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में प्रस्तुत तर्क और सिद्धांत धार्मिक दृष्टिकोणों पर आधारित हैं और इनका सार्वभौमिक तर्क से मेल नहीं खाता। विभिन्न संस्कृति और समाज में इन विचारों को विभिन्न प्रकार से समझा जाता है, और यह आलोचनाएँ उन संदर्भों में उपयुक्त नहीं हो सकतीं जहाँ विश्वास की विविधता है।

आयत 66-70 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 66

आयत का अनुवाद: "तब उस दिन उन्हें बातें न सूझ पड़ेगी (और) फिर बाहम एक दूसरे से पूछ भी न सकेगें।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): यह आयत यह कहती है कि क़यामत के दिन लोग एक-दूसरे से कोई सवाल नहीं पूछ सकेंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि क़यामत के दिन स्थिति इतनी गंभीर होगी कि लोग कोई भी संवाद नहीं कर पाएंगे। यह विचार धार्मिक परिप्रेक्ष्य पर आधारित है, जो हर व्यक्ति की समझ और आस्थाओं पर निर्भर है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत और योग दर्शन में, यह माना जाता है कि मृत्यु के बाद आत्मा को अपनी कर्मों के आधार पर स्थिति का सामना करना पड़ता है। लेकिन इस स्थिति का अनुभव व्यक्तिगत और मानसिक स्तर पर होता है, न कि बाहरी संवाद के रूप में।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत व्याप्ति के दृष्टिकोण से सही है, लेकिन यह केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को प्रमोट करती है, जिसे सभी समाजों में सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं किया जा सकता।**

आयत 67

आयत का अनुवाद: "मगर हाँ जिस शख़्स ने तौबा कर ली और इमान लाया और अच्छे अच्छे काम किए तो क़रीब है कि ये लोग अपनी मुरादें पाने वालों से होंगे।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि तौबा करने, इमान लाने और अच्छे कर्म करने वाले लोग अपनी मुरादें पाने वाले होंगे।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि ईश्वर के प्रति सच्चा आस्थावान और कर्मनिष्ठ व्यक्ति अपने इच्छित फल को प्राप्त करेगा। यह विचार एक विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो सभी पर समान रूप से लागू नहीं हो सकता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय धर्मों में, जैसे कि कर्म सिद्धांत में यह कहा गया है कि व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार फल मिलता है, न कि केवल आस्थाओं के आधार पर। इसी तरह, कर्म और आस्था दोनों का संतुलन आवश्यक है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक तर्क प्रस्तुत करती है जो धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, और यह हर व्यक्ति के अनुभव और विश्वासों के लिए समान रूप से लागू नहीं हो सकता।**

आयत 68

आयत का अनुवाद: "और तुम्हारा परवरदिगार जो चाहता है पैदा करता है और (जिसे चाहता है) मुन्तख़िब करता है और ये इन्तिख़ाब लोगों के एख़्तियार में नहीं है और जिस चीज़ को ये लोग ख़ुदा का शरीक बनाते हैं उससे ख़ुदा पाक और (कहीं) बरतर है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर अपनी इच्छा से लोगों को चुनता है और वह किसी के नियंत्रण में नहीं है। इसके साथ ही यह कहा गया है कि लोग जिन चीजों को ईश्वर का शरीक मानते हैं, वह असत्य हैं, क्योंकि ईश्वर उनसे परे है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि ईश्वर का चयन और निर्णय मानव नियंत्रण से बाहर होता है और ईश्वर का कोई शरीक नहीं हो सकता। यह विचार धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है और दूसरे दृष्टिकोणों को नकारता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि वेदांत में, यह माना जाता है कि ईश्वर एक सर्वोच्च शक्ति है, लेकिन अन्य धार्मों और विश्वासों में भी ईश्वर के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है, जो इस आयत से भिन्न है।**
- **निगमन (Conclusion): इस आयत का प्रमाण केवल एक विशिष्ट धार्मिक परिप्रेक्ष्य से लिया गया है, जो सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं है। यह विचार केवल उस धर्म के अनुयायियों के लिए लागू हो सकता है, जो ईश्वर के एकल रूप में विश्वास करते हैं।**

आयत 69

आयत का अनुवाद: "और (ऐ रसूल) ये लोग जो बातें अपने दिलों में छिपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं तुम्हारा परवरदिगार खूब जानता है।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि ईश्वर उन विचारों और भावनाओं को भी जानता है जो लोग अपने दिलों में छिपाते हैं।
- हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि ईश्वर सभी चीजों को जानने वाला है, चाहे वह ज्ञात हो या छिपा हुआ हो। यह तर्क धार्मिक विश्वासों पर आधारित है, लेकिन यह सार्वभौमिक नहीं है।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, जैसे कि योग और ध्यान के अभ्यास में, यह माना जाता है कि व्यक्ति की अंतरात्मा और उसके विचारों को उसके खुद के ही आंतरिक अनुभवों द्वारा समझा जा सकता है, लेकिन ईश्वर का ज्ञान केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण है।
- निगमन (Conclusion): यह तर्क व्याप्ति के आधार पर सही हो सकता है, लेकिन यह सभी पर समान रूप से लागू नहीं हो सकता, क्योंकि इसे केवल एक धार्मिक संदर्भ में देखा जाता है।

आयत 70

आयत का अनुवाद: "और वही ख़ुदा है उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं, दुनिया और आख़िरत में उस की तारीफ़ है और उसकी हुकूमत है और तुम लोग (मरने के बाद) उसकी तरफ लौटाए जाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि केवल ईश्वर की ही पूजा योग्य है और वह दुनिया और आख़िरत में सर्वोच्च है।
- हेतु (Reason): यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें ईश्वर को सर्वोच्च माना जाता है और उसकी पूजा को सर्वमान्य ठहराया जाता है। हालांकि, यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता क्योंकि अलग-अलग संस्कृति और विश्वास प्रणालियों में यह विचार भिन्न हो सकते हैं।
- उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेषकर हिंदू धर्म में, अनेक देवताओं की पूजा की जाती है, और प्रत्येक देवता का स्थान अपनी भूमिका और महत्व के अनुसार है। इसलिए, यह तर्क केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण से आता है।

- **निगमन (Conclusion):** यह तर्क केवल एक धार्मिक परिप्रेक्ष्य से लिया गया है और यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता, क्योंकि दुनिया भर में विभिन्न धर्म और विश्वास प्रणालियाँ हैं।

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
66	व्याप्ति	धार्मिक दृष्टिकोण से केवल एक विशेष स्थिति का वर्णन, जो सार्वभौमिक नहीं है।
67	हेतु	केवल अच्छे कर्म और आस्था को फल देने वाला सिद्धांत, जो सार्वभौमिक नहीं है।
68	प्रमाण	केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित तर्क, जो अन्य विश्वास प्रणालियों में लागू नहीं होता।
69	व्याप्ति	केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित तर्क, जो सभी पर समान रूप से लागू नहीं होता।
70	प्रमाण	धार्मिक दृष्टिकोण से लिया गया तर्क, जो सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दी गई तर्कों और विचारों का आधार एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण है, जो सार्वभौमिक रूप से सभी समाजों, संस्कृतियों, और विश्वास प्रणालियों पर लागू नहीं हो सकता। इन आयतों में दिए गए सिद्धांत केवल उस धार्मिक परिप्रेक्ष्य से मेल खाते हैं, जिसमें यह प्रस्तुत किए गए हैं।

आयत 71-75 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 71

आयत का अनुवाद: " (ऐ रसूल इन लोगों से) कहो कि भला तुमने देखा कि अगर ख़ुदा हमेशा के लिए क़यामत तक तुम्हारे सरों पर रात को छाए रहता तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हारे पास रौशनी ले आता तो क्या तुम सुनते नहीं हो।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि अगर अल्लाह रात को हमेशा के लिए बना देता तो कोई और शक्ति नहीं हो सकती थी जो रौशनी ला सके।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि रात और दिन का नियंत्रण अल्लाह के हाथ में है और वह किसी और शक्ति को यह कार्य करने का अधिकार नहीं देता। यह धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन, जैसे कि संख्य योग और अद्वैत वेदांत, यह मानते हैं कि ब्रह्म (ईश्वर) ही सर्वोच्च है, लेकिन वे यह भी मानते हैं कि सृष्टि की गतिविधियों में अन्य शक्तियों का भी योगदान है। इसी तरह, यह दृष्टिकोण सभी दृष्टिकोणों के लिए सार्वभौमिक नहीं हो सकता।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो एक विशेष धार्मिक परिप्रेक्ष्य से आता है। इसलिए यह सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।**

आयत 72

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल उन से) कह दो कि भला तुमने देखा कि अगर ख़ुदा क़यामत तक बराबर तुम्हारे सरों पर दिन किए रहता तो अल्लाह के सिवा कौन ख़ुदा है जो तुम्हारे लिए रात को ले आता कि तुम लोग इसमें रात को आराम करो तो क्या तुम लोग (इतना भी) नहीं देखते।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यदि अल्लाह दिन को हमेशा के लिए बना देता तो कोई अन्य शक्ति नहीं हो सकती थी जो रात लाती।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि दिन और रात का संचालन केवल अल्लाह के हाथ में है और किसी अन्य शक्ति का हस्तक्षेप नहीं हो सकता।**

- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि ब्रह्म की इच्छा से सृष्टि का संचालन होता है, लेकिन यह भी कहा जाता है कि प्रकृति और जीवों के बीच परस्पर संबंध हैं। यही विचार इस तर्क से भिन्न है, क्योंकि यह केवल एक शक्ति पर निर्भर करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क केवल एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, और इसे सार्वभौमिक रूप से सत्य के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।**

आयत 73

आयत का अनुवाद: "और उसने अपनी मेहरबानी से तुम्हारे वास्ते रात और दिन को बनाया ताकि तुम रात में आराम करो और दिन में उसके फ़ज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश करो और ताकि तुम लोग शुक्र करो।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि रात और दिन की रचना ईश्वर की मेहरबानी है, ताकि लोग आराम करें और अपने जीवन के लिए रोज़ी कमाने का प्रयास करें।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि रात और दिन की संरचना का उद्देश्य इंसान के जीवन की सुविधा और उन्नति है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह माना जाता है कि जीवन का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है, लेकिन वहीं कर्मों के द्वारा संसार में अपना स्थान बनाने की भी बात की जाती है। इस दृष्टिकोण में रात और दिन का उद्देश्य केवल आराम और जीविका का साधन नहीं है, बल्कि आत्मा के उन्नति के लिए भी है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क एक निश्चित धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो सभी के अनुभव और विश्वासों के लिए समान रूप से लागू नहीं हो सकता।**

आयत 74

आयत का अनुवाद: "और (उस दिन को याद करो) जिस दिन वह उन्हें पुकार कर पूछेगा जिनको तुम लोग मेरा शरीक ख़्याल करते थे वह (आज) कहाँ हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़यामत के दिन उन लोगों से पूछा जाएगा जो अल्लाह के शरीक मानते थे, कि उनके शरीक कहाँ हैं।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि क़यामत के दिन अल्लाह ही सर्वोच्च होगा और किसी अन्य का कोई अस्तित्व नहीं होगा।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय धर्मों में, जैसे कि जैन धर्म में, यह माना जाता है कि ब्रह्म (ईश्वर) ही सर्वोच्च है, लेकिन वहाँ अन्य देवताओं की भी पूजा की जाती है। यहाँ तर्क यह कहता है कि केवल अल्लाह सर्वोच्च है, लेकिन अन्य धर्मों में यह दृष्टिकोण भिन्न हो सकता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो अन्य विश्वास प्रणालियों के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।**

आयत 75

आयत का अनुवाद: "और हम हर एक उम्मत से एक गवाह (पैग़म्बर) निकाले (सामने बुलाएँगे) फिर (उस दिन मुशरेकीन से) कहेंगे कि अपनी (बराअत की) दलील पेश करो तब उन्हें मालूम हो जाएगा कि हक़ ख़ुदा ही की तरफ़ है और जो इफ़तेरा परवाज़ियाँ ये लोग किया करते थे सब उनसे ग़ायब हो जाएँगी।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि हर उम्मत से एक गवाह निकाला जाएगा और उनसे उनके दावों की दलील पेश करने को कहा जाएगा।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि क़यामत के दिन सत्य का खुलासा होगा और किसी भी झूठे दावे को सिद्ध करने का मौका नहीं मिलेगा।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय धर्मों में, जैसे कि शास्त्रों में यह कहा जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्मों का फल मिलता है, और यह उसकी स्वतंत्रता और निर्णय पर निर्भर करता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह आयत एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है, जो सभी विश्वास प्रणालियों में समान रूप से लागू नहीं हो सकता।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना

71	**व्याप्ति**	**केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित तर्क, जो सार्वभौमिक नहीं हो सकता।**
72	**प्रमाण**	**धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित, जो सभी के लिए समान रूप से लागू नहीं हो सकता।**
73	**हेतु**	**एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण, जो सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता।**
74	**प्रमाण**	**एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण, जो सभी विश्वास प्रणालियों के लिए स्वीकार्य नहीं है।**
75	**प्रमेय**	**केवल एक विशेष दृष्टिकोण से समझने वाला तर्क, जो अन्य धर्मों और विश्वासों के लिए स्वीकार्य नहीं हो सकता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों में दिए गए विचार और तर्क एक विशिष्ट धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो सभी पर समान रूप से लागू नहीं हो सकते। इन आयतों का उद्देश्य धार्मिक विश्वासों को बढ़ावा देना है, लेकिन यह अन्य धर्मों और विश्वास प्रणालियों के लिए सार्वभौमिक रूप से सत्य नहीं हो सकता।

आयत 76-80 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 76

आयत का अनुवाद: "(नाशुक्री का एक क़िस्सा सुनो) मूसा की क़ौम से एक शख़्स कारुन (नामी) था तो उसने उन पर सरकशी शुरु की और हमने उसको इस क़दर ख़ज़ाने अता किए थे कि उनकी कुन्जियाँ एक सकतदार जमाअत (की जामअत) को उठाना दूभर हो जाता था जब (एक बार) उसकी क़ौम ने उससे कहा कि (अपनी दौलत पर) इतरा मत क्योंकि ख़ुदा इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमाण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कारुन के बारे में कहा गया है कि वह अपनी दौलत पर इतराता था, और उसकी क़ौम ने उसे सलाह दी कि वह घमंड न करे क्योंकि अल्लाह घमंड करने वालों को पसंद नहीं करता।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि घमंड और अहंकार से परहेज करना चाहिए क्योंकि अल्लाह घमंड करने वालों को पसंद नहीं करता। यह परामर्श धार्मिक दृष्टिकोण से आया है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी अहंकार और घमंड को नकारात्मक रूप में देखा गया है। जैसे कि भगवद गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया है कि अहंकार से मनुष्य का पतन होता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क उस समय की धार्मिक और नैतिक शिक्षा पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हो सकती है, लेकिन यह विशेष रूप से एक धार्मिक दृष्टिकोण से लिया गया है।**

आयत 77

आयत का अनुवाद: "और जो कुछ ख़ुदा ने तूझे दे रखा है उसमें आख़िरत के घर की भी जुस्तजू कर और दुनिया से जिस क़दर तेरा हिस्सा है मत भूल जा और जिस तरह ख़ुदा ने तेरे साथ एहसान किया है तू भी औरों के साथ एहसान कर और रुए ज़मीन में फसाद का ख़्वाहा न हो-इसमें शक नहीं कि ख़ुदा फ़साद करने वालों को दोस्त नहीं रखता।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि दुनिया और आख़िरत दोनों के लिए प्रयास करना चाहिए, और यह भी कहा गया है कि दुनिया में इंसान को किसी प्रकार का फसाद नहीं फैलाना चाहिए।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि यदि इंसान अपनी दौलत और संसाधनों का सही उपयोग करता है, तो वह न केवल अपने लिए बल्कि समाज के लिए भी एक बेहतर रास्ता अपनाएगा।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में, विशेष रूप से भाग्य और कर्म के सिद्धांत के अनुसार, हर व्यक्ति को अपने कर्मों का फल मिलता है। अच्छे कर्मों से समाज में शांति और समृद्धि आती है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क सभी धर्मों और नैतिक सिद्धांतों में साझा है, और यह सामान्य रूप से स्वीकार्य हो सकता है कि इंसान को अच्छे कर्मों का पालन करना चाहिए और समाज में फसाद से बचना चाहिए।**

आयत 78

आयत का अनुवाद: ”तो क़ारुन कहने लगा कि ये (माल व दौलत) तो मुझे अपने इल्म (कीमिया) की वजह से हासिल होता है क्या क़ारुन ने ये भी न ख़्याल किया कि अल्लाह उसके पहले उन लोगों को हलाक़ कर चुका है जो उससे क़ूवत और हैसियत में कहीं बढ़ बढ़ के थे और गुनाहगारों से (उनकी सज़ा के वक़्त) उनके गुनाहों की पूछताछ नहीं हुआ करती।”

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में क़ारुन के द्वारा अपनी दौलत को अपनी व्यक्तिगत क्षमता (कीमिया) का परिणाम मानने का उल्लेख है, और यह बताया गया है कि वह अपने से पहले के लोगों के नाश का विचार नहीं करता।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह कहता है कि क़ारुन को यह नहीं समझना चाहिए था कि उसकी सफलता केवल उसकी मेहनत और ज्ञान से आई है, क्योंकि वह नहीं देख रहा था कि उससे पहले के लोग भी नष्ट हो गए थे।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह अवधारणा विशेष रूप से वेदांत और संख्ययोग के सिद्धांतों में देखी जाती है, जहां यह माना जाता है कि हर व्यक्ति का जन्म और मृत्यु निश्चित और कर्मों के आधार पर निर्धारित होते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क धर्म और कर्म के सिद्धांतों पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से लागू हो सकता है कि किसी भी व्यक्ति को अपनी सफलता या संपत्ति को केवल अपनी मेहनत से जोड़ना उचित नहीं है।**

आयत 79

आयत का अनुवाद: ”ग़रज़ (एक दिन क़ारुन) अपनी क़ौम के सामने बड़ी आराइश और ठाठ के साथ निकला तो जो लोग दुनिया को (चन्द रोज़ा) ज़िन्दगी के तालिब थे (इस शान से देख कर) कहने लगे जो माल व दौलत क़ारुन को अता हुयी है काश मेरे लिए भी होती इसमें शक नहीं कि क़ारुन बड़ा नसीब वर था।”

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि क़ारुन अपनी शान-ओ-शौकत के साथ अपनी क़ौम के सामने आया और लोगों ने उसकी दौलत को देखकर ईर्ष्या की।**

- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि लोग अपनी स्थिति और दौलत देखकर क़ारुन से प्रभावित होते हैं, और इसे नसीब का परिणाम मानते हैं।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय समाज में भी देखा जाता है कि जब कोई व्यक्ति अपने ऐश्वर्य और सफलता के साथ सामने आता है, तो समाज के कुछ लोग उसकी सफलता की कामना करते हैं और उसे नसीब का हिस्सा मानते हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क सामाजिक और मानसिक दृष्टिकोण से सही है कि लोग सफलता और दौलत से प्रभावित होते हैं, लेकिन यह गलत है कि केवल ऐश्वर्य को ही नसीब का परिणाम माना जाए।**

आयत 80

आयत का अनुवाद: "और जिन लोगों को (हमारी बारगाह में) इल्म अता हुआ था कहनें लगे तुम्हारा नास हो जाए (अरे) जो शख़्स इमान लाए और अच्छे काम करे उसके लिए तो ख़ुदा का सवाब इससे कही बेहतर है और वह तो अब सब्र करने वालों के सिवा दूसरे नहीं पा सकते।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमा (Upamana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जो लोग ज्ञान और समझ रखते हैं, वे क़ारुन की दौलत को देखकर यह कहते हैं कि जो इमान लाए और अच्छे काम करे, उसे अल्लाह का सवाब मिलेगा, जो क़ारुन की दौलत से कहीं बेहतर है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि सही मार्ग पर चलने और अच्छे कर्म करने से इंसान को वास्तव में अधिक लाभ मिलेगा।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह विचार वेदांत और भगवद गीता में मिलता है, जहाँ कर्म योग और भक्ति को सर्वोत्तम माना जाता है, और यह कहा जाता है कि धन और सांसारिक वस्तुओं से अधिक महत्वपूर्ण आत्मा का कल्याण है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क एक सकारात्मक नैतिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो यह बताता है कि व्यक्ति को सांसारिक लाभों से अधिक आत्मिक और नैतिक उन्नति पर ध्यान देना चाहिए।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत	चुना गया	मुख्य आलोचना

संख्या	तत्व	
76	प्रमाण	यह तर्क केवल एक धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।
77	हेतु	यह तर्क सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हो सकता है कि व्यक्ति को अच्छे कर्म करने चाहिए और समाज में फसाद से बचना चाहिए।
78	प्रमेय	यह तर्क एक सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में लागू हो सकता है कि सफलता केवल व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम नहीं होती।
79	व्याप्ति	यह तर्क केवल व्यक्तियों के मानसिक दृष्टिकोण को दर्शाता है, और यह जीवन की वास्तविकता को अधिक गहराई से न देखता है।
80	उपमा	यह तर्क भारतीय दर्शन में भी समान विचारों के साथ जुड़ा हुआ है, और इसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जा सकता है।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों का विश्लेषण धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से किया गया है, और कुछ आयतों के तर्क सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हो सकते हैं, जैसे कि अच्छे कर्मों की अहमियत और समाज में शांति का पालन करना। हालांकि, कुछ आयतें केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो अन्य धर्मों और विश्वास प्रणालियों के लिए सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकतीं।

आयत 81-85 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 81

आयत का अनुवाद: "और हमने क़ारुन और उसके घर बार को ज़मीन में धंसा दिया फिर ख़ुदा के सिवा कोई जमाअत ऐसी न थी कि उसकी मदद करती और न खुद आप अपनी मदद आप कर सका।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में क़ारुन और उसके घर बार के ज़मीन में धंसने का उल्लेख है, और यह कहा गया है कि उसे किसी ने मदद नहीं की, न ही वह खुद अपनी मदद कर सका।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि जब किसी व्यक्ति का समय बुरा आता है, तो उसे कोई भी बचाने वाला नहीं होता और न ही वह खुद अपनी मदद कर सकता है। यह नैतिक सिख है कि अहंकार और घमंड के परिणामस्वरूप व्यक्ति अकेला पड़ जाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह सिद्धांत देखा जाता है कि आत्म-संयम और अहंकार के नकारात्मक परिणाम होते हैं, और व्यक्ति को अपनी स्थिति को सही तरीके से देखना चाहिए।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क विशेष रूप से एक धार्मिक दृष्टिकोण से लिया गया है, जो यह सिखाता है कि अहंकार और घमंड के कारण व्यक्ति के गिरने की स्थिति आती है। यह तर्क सभी विश्वास प्रणालियों में सार्वभौमिक रूप से नहीं माना जा सकता।**

आयत 82

आयत का अनुवाद: "और जिन लोगों ने कल उसके जाह व मरतबे की तमन्ना की थी वह (आज ये तमाशा देखकर) कहने लगे अरे माज़अल्लाह ये तो ख़ुदा ही अपने बन्दों से जिसकी रोज़ी चाहता है कुशादा कर देता है और जिसकी रोज़ी चाहता है तंग कर देता है और अगर (कहीं) ख़ुदा हम पर मेहरबानी न करता (और इतना माल दे देता) तो उसकी तरह हमको भी ज़रुर धँसा देता-और माज़अल्लाह (सच है) हरगिज़ कुफ्फार अपनी मुरादें न पाएँगें।"

चुना गया न्याय तत्व: हेतु (Hetu)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़ारुन की स्थिति को देखकर लोग यह मानने लगे कि अल्लाह ही अपने बंदों की रोज़ी को बढ़ाता और घटाता है, और यह भी कहते हैं कि यदि अल्लाह ने उन पर मेहरबानी नहीं की होती, तो वे भी क़ारुन की तरह धंसा दिए जाते।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह कहता है कि जीवन की स्थिति और संसाधन केवल अल्लाह के हाथ में होते हैं, और इंसान इस पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रखता।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह तर्क वेदांत और भागवद गीता में मिलता है, जहां कर्मों और भाग्य के सिद्धांत पर आधारित है कि जीवन की परिस्थितियाँ भगवान के हाथ में होती हैं।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क एक धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन यह तर्क सार्वभौमिक रूप से लागू नहीं हो सकता क्योंकि कई दृष्टिकोणों के अनुसार व्यक्ति अपनी मेहनत और निर्णयों के परिणाम का सामना करता है।**

आयत 83

आयत का अनुवाद: "ये आख़िरत का घर तो हम उन्हीं लोगों के लिए ख़ास कर देगें जो रुए ज़मीन पर न सरकशी करना चाहते हैं और न फसाद-और (सच भी यूँ ही है कि) फिर अन्जाम तो परहेज़गारों ही का है।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय **(Prameya)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में यह कहा गया है कि आख़िरत का घर (स्वर्ग) उन लोगों के लिए है जो ज़मीन पर सरकशी (उत्पात) और फसाद नहीं फैलाते, और जो परहेज़गारी को अपनाते हैं।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क यह कहता है कि सही जीवन जीने और नैतिकता से चलने वाले लोग ही सच्चे पुरस्कार के पात्र होते हैं।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में नैतिक जीवन और कर्म का सिद्धांत इस तर्क के समर्थन में है, जैसे कि भगवद गीता में अच्छे कर्मों और परहेज़गारी का महत्त्व बताया गया है।
- **निगमन (Conclusion):** यह तर्क एक सार्वभौमिक नैतिकता और धार्मिक शिक्षा पर आधारित है, जिसे विभिन्न धर्मों में स्वीकार किया जा सकता है।

आयत 84

आयत का अनुवाद: "जो शख़्स नेकी करेगा तो उसके लिए उसे कहीं बेहतर बदला है औ जो बुरे काम करेगा तो वह याद रखे कि जिन लोगों ने बुराइयाँ की हैं उनका वही बदला है जो दुनिया में करते रहे हैं।"

चुना गया न्याय तत्व: उपमा **(Upamana)**

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition):** इस आयत में कहा गया है कि जो लोग अच्छे काम करेंगे, उन्हें बेहतर बदला मिलेगा, और जो बुरे काम करेंगे, उन्हें उनके किए गए कर्मों का फल मिलेगा।
- **हेतु (Reason):** यह तर्क यह मानता है कि हर व्यक्ति को उसके कर्मों का फल मिलता है, चाहे वह अच्छे हों या बुरे। यह एक नैतिक और न्यायिक सिद्धांत है।
- **उदाहरण (Example):** भारतीय दर्शन में यह सिद्धांत कर्मफल के रूप में स्पष्ट है, जहाँ हर व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुसार परिणाम भुगतने होते हैं।
- **निगमन (Conclusion):** यह तर्क सार्वभौमिक रूप से लागू होता है और इसे सभी धर्मों में एक समान माना जा सकता है, क्योंकि यह न्याय के सिद्धांत पर आधारित है।

आयत 85

आयत का अनुवाद: "(ऐ रसूल) ख़ुदा जिसने तुम पर कुरआन नाज़िल किया ज़रुर ठिकाने तक पहुँचा देगा (ऐ रसूल) तुम कह दो कि कौन राह पर आया और कौन सरीही गुमराही में पड़ा रहा।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह ने कुरआन को नाज़िल किया और उसे निश्चित स्थान तक पहुँचाएगा, और यह सवाल उठाया गया है कि कौन रास्ते पर है और कौन गुमराही में।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि धार्मिक सत्य और मार्गदर्शन केवल अल्लाह के पास है, और वह सही मार्ग का पालन करने वालों को दिखाता है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह विचार वेदांत और अन्य धार्मिक साहित्य में पाया जाता है, जहाँ यह कहा जाता है कि सच्चा मार्ग केवल ईश्वर द्वारा दिखाया जाता है।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता, क्योंकि यह केवल एक विशिष्ट विश्वास प्रणाली पर आधारित है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
81	**प्रमेय**	**यह तर्क केवल धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**
82	**हेतु**	**यह तर्क विशुद्ध धार्मिक दृष्टिकोण है, जो सभी विश्वास प्रणालियों में समान रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**
83	**प्रमेय**	**यह तर्क नैतिक जीवन के सिद्धांत पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से लागू हो सकता है।**
84	**उपमा**	**यह तर्क सार्वभौमिक रूप से लागू होता है क्योंकि यह कर्मफल के सिद्धांत**

		पर आधारित है।
85	व्याप्ति	यह तर्क विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित है, जो सभी विश्वास प्रणालियों में समान रूप से लागू नहीं हो सकता।

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों का विश्लेषण धर्म, कर्म, और नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित है। कुछ आयतें सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य हैं, जैसे कर्मफल का सिद्धांत, जबकि कुछ अन्य आयतें केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित हैं, जो अन्य विश्वास प्रणालियों के लिए सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकतीं।

आयत 86-88 का न्याय दर्शन के आधार पर तार्किक विश्लेषण और आलोचना

आयत 86

आयत का अनुवाद: "इससे मेरा परवरदिगार ख़ूब वाक़िफ है और तुमको तो ये उम्मीद न थी कि तुम्हारे पास ख़ुदा की तरफ़ से किताब नाज़िल की जाएगी मगर तुम्हारे परवरदिगार की मेहरबानी से नाज़िल हुयी तो तुम हरग़िज़ काफिरों के पुष्ट पनाह न बनना।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमण (Pramana)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि क़ुरआन का नाज़िल होना केवल अल्लाह की मेहरबानी से हुआ है और इसलिए काफिरों के पक्ष में खड़ा होना उचित नहीं है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि क़ुरआन की सत्यता और उसका महत्व केवल अल्लाह की इच्छा और मार्गदर्शन से है, और उस पर विश्वास करना आवश्यक है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी सत्य की खोज केवल ईश्वर के प्रकाश से ही संभव मानी जाती है। उदाहरण के रूप में भगवद गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को सत्य का ज्ञान प्रदान किया, जो केवल उनकी कृपा से संभव हुआ।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क एक धार्मिक दृष्टिकोण से तर्कसंगत है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता क्योंकि यह केवल एक विशिष्ट धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

आयत 87

आयत का अनुवाद: "कहीं ऐसा न हो एहकामे ख़ुदा वन्दी नाज़िल होने के बाद तुमको ये लोग उनकी तबलीग़ से रोक दें और तुम अपने परवरदिगार की तरफ़ (लोगों को) बुलाते जाओ और ख़बरदार मुशरेकीन से हरगिज़ न होना।"

चुना गया न्याय तत्व: व्याप्ति (Vyapti)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि जब तक अल्लाह के आदेश न हों, तब तक मुशरिकों की बातें न मानी जाएं और अपना काम जारी रखा जाए।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि जब कोई सच्चाई प्राप्त हो, तो उसे फैलाना एक कर्तव्य है और बाहरी दबावों के बावजूद उसे नहीं रोकना चाहिए।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में भी यह सिद्धांत देखा जाता है, विशेष रूप से भगवद गीता में जहां अर्जुन को अपने धर्म को निभाने के लिए प्रेरित किया जाता है, भले ही उसे अपने परिवार से विरोध का सामना करना पड़े।**
- **निगमन (Conclusion): यह तर्क एक धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण से स्वीकार्य नहीं हो सकता, क्योंकि यह केवल एक विशेष विश्वास प्रणाली पर आधारित है।**

आयत 88

आयत का अनुवाद: "और ख़ुदा के सिवा किसी और माबूद की परसतिश न करना उसके सिवा कोई क़ाबिले परसतिश नहीं उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ फ़ना होने वाली है उसकी हुकूमत है और तुम लोग उसकी तरफ़ (मरने के बाद) लौटाये जाओगे।"

चुना गया न्याय तत्व: प्रमेय (Prameya)

विश्लेषण और आलोचना:

- **प्रतिज्ञा (Proposition): इस आयत में यह कहा गया है कि केवल अल्लाह की पूजा करनी चाहिए और वह सच्चे ईश्वर हैं, क्योंकि उनकी सत्ता शाश्वत और सर्वशक्तिमान है।**
- **हेतु (Reason): यह तर्क यह मानता है कि हर चीज़ का अंत है, केवल अल्लाह की सत्ता स्थायी है, और यही कारण है कि उसकी पूजा सबसे महत्वपूर्ण है।**
- **उदाहरण (Example): भारतीय दर्शन में यह विचार शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत में मिलता है, जिसमें यह कहा जाता है कि परमात्मा के अलावा कुछ भी शाश्वत नहीं है और केवल वही सच्चा ईश्वर है।**

- **निगमन (Conclusion): यह तर्क एक धार्मिक दृष्टिकोण से सही हो सकता है, लेकिन यह सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता क्योंकि यह केवल एक विशेष धार्मिक विश्वास पर आधारित है।**

सारणी (आयतों का तार्किक मूल्यांकन)

आयत संख्या	चुना गया तत्व	मुख्य आलोचना
86	**प्रमाण (Pramana)**	**यह तर्क धार्मिक दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**
87	**व्याप्ति (Vyapti)**	**यह तर्क केवल धार्मिक दृष्टिकोण से लागू होता है और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकता।**
88	**प्रमेय (Prameya)**	**यह तर्क शाश्वत ईश्वर की अवधारणा पर आधारित है, जो अन्य विश्वास प्रणालियों में लागू नहीं हो सकता।**

समग्र निष्कर्ष:

इन आयतों का विश्लेषण विशेष रूप से धार्मिक सत्य और ईश्वर की पूजा के बारे में है। इन आयतों में दी गई शिक्षा केवल एक विशेष धार्मिक दृष्टिकोण (इस्लाम) पर आधारित है, और अन्य विश्वास प्रणालियों के लिए ये विचार सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य नहीं हो सकते। इनमें से कुछ तर्क केवल एक विश्वास प्रणाली में ही मान्य हैं, जबकि अन्य तर्क पारंपरिक धार्मिक विचारों के अनुरूप हैं।